ज्ञानामृत

मार्च, 1988

वर्ष 23 ❋ अंक 9

मूल्य 1.75

1. बम्बई— सब के सहयोग से सुखमय संसार' उत्सव का उद्घाटन हुआ। ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, कल्याण मंत्री, भारत सरकार, लोक प्रसिद्ध टी० वी० सीरियल रामायण के निदेशक एवं निर्माता भ्राता रामानन्द सागर जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा अन्य मंच पर उपस्थित हैं।

2. नई दिल्ली— विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक का उद्घाटन हुआ। भ्राता जगदेव सिंह, अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, भ्राता नगेन्द्र नारायण, न्याया के उपकुलपति, दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य शिवशक्तियाँ भी साथ में खड़े हैं।

3. कलकत्ता— विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक का उद्घाटन हुआ। ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता जी तथा बहन रेनबर्ड जी दीप प्रज्वलित करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा मेडिकल विंग आफ़ राजयोगा एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में (२० फरवरी, १९८८ को) स्थानीय रवीन्द्र नाट्य गृह में अन्तर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर म० प्र० के राज्यपाल प्रो० के० एम० चांडी जी, म० प्र० के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री महेश जोशी जी, संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादीजी, संस्था के प्रमुख वक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश जी, प्रसिद्ध चिकित्सक डा० एस० के मुखर्जी, डा० सी० ० तिवारी, पश्चिम जर्मनी की डा० हायडी फिटकाऊ, ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी आदि सबने दीप प्रज्जवलित किया। चित्र उसी अवसर का।

भोपाल – में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन भ्राता रामकिशोर शुक्ल जी, वित्त मंत्री, मध्यप्रदेश सरकार तथा ब्रह्माकुमार महेन्द्र जी दीप प्रज्जवलित कर कर रहे हैं।

शिमला में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता कौल सिंह ठाकुर जी, विभिन्न बैंकों के प्रबन्धकगण तथा अन्य मोमबतियां जलाकर कर रहे हैं।

दिल्ली (शक्तिनगर) – पौलैंड से पधारे १७ भाई-बहनों के एक ग्रुप को ब्र० कु० जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत आध्यात्मिक संग्रहालय में चित्रों की व्याख्या दे रहे हैं।

जयपुर (संग्रहालय) – राजस्थान राज्य के मुख्यमंत्री भ्राता शिव चरण माथुर जी सपरिवार सेवाकेन्द्र पर पधारे। चित्र में वे तथा अन्य भाई-बहनें परमात्मा शिव को भोग लगा रहे हैं।

इन्दौर :– अन्तर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ सम्मेलन के अवसर पर "अखिल भारतीय स्वास्थ जागृति अभियान" का उद्घाटन करते हुए म० प्र० के राज्यपाल भ्राता के० एम० चांडी जी।

कलकत्ता – आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी (हरिद्वार) ब्र० कु० निर्मलशान्ता दादी जी से ज्ञान वार्तालाप कर रहे हैं।

बम्बई :– 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' उत्सव में पधारे श्रोतागण।

विजयवाड़ा में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन (बाएं से दाएं) सिंडीकेट बैंक (विजयवाड़ा) के प्रबन्धक, प्योरिटी पत्रिका के सम्पादक ब्र० कु० ब्रिजमोहन जी, ब्र० कु० आशा बहन तथा भ्राता जी० एस० राजू जी दीप प्रज्जवलित कर रहे हैं।

बम्बई (गामदेवी) – मेहता हाऊस में नए 'हृदय-रोग उपचार केन्द्र' के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं – दादी शील इन्द्रा जी, ब्र० कु० उषा बहन, ब्र० कु० रमेश, डा० सिद्धार्थ दंगली एवं उनकी युगल तथा अन्य।

Regd.No.10563/65-D, (E) -- 70

कटक – 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' के उद्घाटन समारोह में मंच पर (बाएं से दाएं) ब्र० कु० मृत्युञ्जय, अर्बन सहकारी बैंक के चेयरमैन भ्राता डी० एन० मोहन्ती, युको बैंक के सहायक महाप्रबन्धक भ्राता एस० एल० जैन, ब्र० कु० आशा बहन (सम्बोधित करतीं हुई), एस० एस० पधीं, भू० पू० डी० जी० पुलिस, उड़िसा, भारतीय रिजर्व बैंक के सहायक मुख्य अधिकारी भ्राता एम० आर० परवार तथा ब्र० कु० बहनें विराजमान हैं।

इंदौर – लोकप्रिय टी० वी० सीरियल 'रामायण' के निर्माता एवं निदेशक भ्राता रामानंद सागर जी को ब्र० कु० विमला बहन आध्यात्मिक संग्रहालय में चित्रों पर व्याख्या दे रही हैं।

जनगांव (अ० प्र०) – आंध्र प्रदेश के बिजली मंत्री भ्राता निम्मा राजी रेड्डी जी 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन टेप काटकर कर रहे हैं।

काठमांडू – विश्व शान्ति भवन के हाल में महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में भ्राता नर बहादुर बुढाथोकी, सहायक विकास मन्त्री अपने विचार प्रकट करते हुए।

अमृत -सूची

१.	द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सक सम्मेलन उद्घाटित—	१
२.	मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य (सम्पादकीय)—	२
३.	अब विकारों की होलिका जलाओ—	३
४.	तेरे प्यार का बदला चुकायेंगे हम—	४
५.	स्वस्थ तन का मन्त्र—	६
६.	क्रोध-मानव जीवन का अभिशाप—	७
७.	श्रेष्ठ मानव—जीवन का आधार—'सहयोग'—	८
८.	कर्म कौशल—	१०
९.	सुखमय होली—	१०
१०.	दोष-दृष्टि—	११
११.	वर्से की स्मृति से श्रेष्ठ स्थिति—	१२
१२.	महानता सत्य की—	१३
१३.	सचित्र समाचार—	१४
१४.	पुराने संस्कारों को पलटाने की सहज विधि—	१५
१५.	सचित्र समाचार—	१६
१६.	मन को मारो नहीं, सुधारो—	२१
१७.	जड़ और चेतन के शुद्धिकरण की प्रक्रिया—	२३
१८.	सबै भूमि गोपाल की, जै कन्हैया लाल की—	२४
१९.	सर्व के सहयोग से सुखमय संसार—	२६
२०.	सचित्र सेवा समाचार—	२९
२१.	स्वस्थ्य जीवन के लिये आहार की शुद्धि एवं कर्मेन्द्रियों का नियंत्रण आवश्यक—	३१

"द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सक सम्मेलन उद्घाटित"

इन्दौर २० फरवरी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एवं मेडिकल विंग आफ राजयोग एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "अन्तर्राष्ट्रीय संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सक सम्मेलन" का स्थानीय रवीन्द्र नाट्य गृह में उद्घाटन करने के पश्चात् मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम प्रो० के. एम. चांडी जी ने कहा कि आज वर्तमान समय विज्ञान और उद्योगों द्वारा हो रहे विकास के पश्चात् भी लोग निरोगी जीवन का सुख प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। अपितु लोग अनेक प्रकार के मतभेदों तथा संघर्षों में उलझे हुए हैं। अमीर और गरीब देशों, विकसित एवं विकासशील देशों तथा अपने ही देश में साम्प्रदायिक अशांति का वातावरण है। क्योंकि मानव ने विकास प्रक्रिया तथा जीवन प्रवाह में व्यवधान उत्पन्न कर दिया है। व्यसनों और अनावश्यक खर्चों के कारण धनी व्यक्तियों का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। अतः हम इस सम्मेलन में देश विदेश से एकत्र हुए चिकित्सक इन समस्याओं पर विचार विमर्श कर निष्कर्ष निकालेंगे कि हमने क्या-क्या प्राप्त किया और क्या खोया।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय महेश जोशीजी ने कहा कि चिकित्सा के माध्यम से की जाने वाली सेवा सबसे बड़ी सेवा और पुण्य है। परन्तु आज भौतिकता के कारण बदली हुई परिस्थितियों में सेवा का स्थान व्यावसायिकता ने ले लिया है अतः मेरा प्रयास रहेगा कि यह व्यवसाय न रह कर पुनः सेवा में परिवर्तित हो जाए। शासन और समाज सेवी संस्थाएँ मिलकर चिकित्सा सेवा को और अधिक बहुमुखी तथा उन्नतशील बनाएँ। शासकीय सुविधाओं का पूरा लाभ लोगों तक पहुँचाएँ।

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज का मानव चिंता ग्रस्त, रोग ग्रस्त तथा अनेक प्रकार की समस्याओं से त्रस्त है। अतएव निरोगी, चिंतामुक्त, खुशहाल, समस्यारहित जीवन यापन के लिए हमें दवाइयों के साथ-साथ दुआ अर्थात् परमात्मा की याद अथवा ध्यान के साथ-साथ श्रेष्ठ कर्मों को अपनाना पड़ेगा। बीमारी हमारे अपने ही कर्मों का प्रतिफल है अतः रोग मुक्ति के लिए चरित्रवान जीवन बनाना अति आवश्यक है। स्वयं,परिवार, समाज, देश तथा विश्व के लिए श्रेष्ठ चरित्र की आवश्यकता है। जिसमें ही समर्थी और समृद्धि की ओर मानव अग्रसर हो सकेगा।

सम्मेलन में संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी ने कहा कि आज के प्रगतिशील विश्व में चिकित्सक समयाभाव के कारण केवल शारीरिक बीमारी का ही परीक्षण कर उपचार करता है। मानसिक एवं सामाजिक स्थिति से वह अपरिचित रहता है। द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर की मानसिक बीमारी के कारण हजारों लोगों को अपना जीवन खोना पड़ा। ऐसे अनेक उदाहरण देते हुए आपने सुझाव दिया कि चिकित्सकों को अपने मरीजों के शारीरिक रोगों के साथ-साथ मानसिक एवं सामाजिक कारणों को भी अलग से पर्ची बनाकर लिखना तथा उनका भी निवारण देना चाहिए जिसमें रोगी की मानसिक अथवा रूहानी चिकित्सा भी हो सके।

सम्मेलन में पश्चिमी जर्मनी की डॉ० हाईडी फिटक्यू, मेडिकल विंग ऑफ राजयोग एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के प्रेसिडेण्ट सर्जन डॉ० एस. आनंदन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने सम्मेलन के आरंभ में अतिथियों एवं वक्ताओं का स्वागत किया। सम्मेलन का उद्देश्य बम्बई के मनोरोग चिकित्सक डॉ० गिरीश पटेल ने बतलाया। डॉ० सी.पी. तिवारी डीन, मेडिकल कालेज, ने धन्यवाद दिया तथा

(शेष १९ पृष्ठ पर)

मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य

आज डाक्टर लोग अपने सम्मेलनों में अथवा अपनी संगोष्ठियों में प्राय: **'सम्पूर्ण स्वास्थ्य'** (Holistic Health) के विषय पर तथा मानसिक तनाव के उपविषय पर चर्चा किया करते हैं। उसमें वे प्राय: इस बात पर भी अपने विचार व्यक्त करते हैं कि आज ७० प्रतिशत से भी अधिक रोग मानसिक कारणों से होते हैं। दूसरे शब्दों में वे ये कहते हैं कि बहुत से शारीरिक रोग जैसे कि रक्तचाप में वृद्धि (High blood pressure), पेट में रसौली (Peptic Ulcer), दमा (Asthma), जोड़ों में दर्द (Arthritus), हृदय रोग (Heart diseases), यहाँ तक कि कैंसर (Cancer) आदि रोग भी मानसिक तनाव (Mental tension), चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की सूक्ष्माग्नि जैसी मानसिक कारणों से होते हैं। अत: अब वे इस बात को महसूस करते हैं कि मनुष्य के व्यक्तिगत लक्षणों (Personality traits), उसकी जीवन पद्धति (Life style) आदि से भी उसके शारीरिक रोगों का सम्बन्ध है क्योंकि मनुष्य के जीवन के अनुभव अथवा उसके व्यवहार की दिव्यता या आसुरीयता उसके शरीर पर अच्छा या बुरा प्रभाव डालते हुए उसे स्वस्थ बनाये रखती है या अस्वस्थ कर देती है। इस बात को सामने रखते हुए विश्व स्वास्थ्य संघ (W.H.O. = World Health Organisation) ने स्वास्थ्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि स्वास्थ्य में शारीरिक पहलू के अतिरिक्त मनुष्य के मानसिक, नैतिक एवम् सामाजिक स्वास्थ्य भी शामिल हैं।

यहाँ तक तो ये बात ठीक है, परन्तु हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि डा० लोगों के पास समय इतना कम होता है और रोगियों की भीड़ इतनी ज़्यादा कि वे रोगी के केवल रोग-चिन्हों (Symptoms) पर ही ध्यान देते हुए उन्हें केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिये ही औषधि दे पाते हैं। रोगी में जल्दबाज़ी की आदत, चिन्ता का स्वभाव, बात-बात में तनाव हो जाने की टेव, ईर्ष्या द्वेष में जलते-भुनते रहने का कसंस्कार, घर वालों तथा अड़ोसियों-पड़ोसियों से मेल-मिलाप की बजाय अनबन और मनमुटाव बनाये रखने की जीवन शैली इत्यादि को ठीक करने के लिये न तो वे रोगी को कोई उपाय बताते हैं, न उसकी पूरी बात सुनकर उसे रोग के इन कारणों से अवगत ही करा पाते हैं और न रोगी ही किसी ऐसी अपेक्षा को लेकर डाक्टर के पास आता है। डाक्टर की ओर से यही प्रयास होता है कि रोगी को ऐसी औषधि दी जाए जिससे उसे तुरन्त राहत मिले और उसके इन रोग चिन्हों का विलोप हो जाए और रोगी डाक्टर के मात्र इतने ही प्रयास से सन्तुष्ट होकर डाक्टर को सप्रणाम भेंटा चढ़ाकर अपने काम में लग जाता है। औद्योगिक सभ्यता (Industrial civilisation) और तकनीकी संस्कृति (Technological culture) के इस कलिकाल में जबकि हर व्यक्ति समय के अभाव के कारण बेतहाशा भाग रहा है और फिर भी उसके कई काम पूरे नहीं हो पाते तब किसी के पास इतना समय ही कहाँ है कि वो रोग को जड़ से समाप्त करने की ओर ध्यान दें। इसका परिणाम ये होता है कि रोग को जन्म देने वाले स्वभाव-संस्कार, आदतें, जीवन पद्धति वही बने रहने के कारण कुछ काल के बाद फिर वही या अन्य कोई रोग उन्हीं कारणों से उत्पन्न हो जाता है।

व्यक्ति के मानसिक रोग के कारण उसे शारीरिक रोग होने की बात हमने ऊपर कही है। इसे तो आज चिकित्सक वर्ग और जन-मानस मानने लगा है। परन्तु इससे भी अधिक कष्टकारी परिणाम जो मानसिक तनाव या अन्य मानसिक कारणों से होते हैं उनकी ओर शायद किसी विरले ही का ध्यान जाता हो–वह यह कि व्यक्ति अपने मानसिक कारणों से स्वयं तो शारीरिक एवम् मानसिक दु:ख पाता ही है परन्तु वो अपनी इस मानसिक विक्षेपता से दूसरों को भी पीड़ित करता है। उदाहरण के तौर पर मानसिक तनाव वाला व्यक्ति स्वयं तो पूर्वकथित रोगों से पीड़ित होता ही है परन्तु तनाव में आकर जब वो अपमानजनक, उत्तेजक और उकसाहट पैदा करने वाले वचनों को बोलता है अथवा वो विध्वंस या हिंसा के कार्यों में प्रवृत होता है तब वो अन्य अनेकों के मन में भी तनाव पैदा कर देता है और उनमें भी तनाव-जनित रोग उनके द्वार के निकट ला खड़े करता है। वो न जाने कितनों के मन में चिन्ता अथवा भय पैदा कर देता है, क्रोध को जन्म देता है अथवा उनका रक्त-चाप बढ़ा देता है। मानसिक रोग का ये सामाजिक पक्ष बहुत भयानक है क्योंकि ये अनेकों के जीवन को दु:खमय बनाता है। शारीरिक रोग तो केवल उसी रोगी के लिए कष्टकारक होता है और केवल कुछ ही लोगों के लिए तनिक असुविधा पैदा करता है परन्तु ये मानसिक रोग तो समाज में ही उथल-पुथल पैदा कर देते हैं, खलबली मचा देते हैं, सामाजिक शान्ति को भंग करते हैं और सारे संसार को ही नर्क बना देते हैं।

थोड़ा विचार कीजिए कि यदि किसी देश का प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति, सेनाध्यक्ष या किसी पत्र का सम्पादक या किसी संगठन (Union) का नेता जल्दी उत्तेजित हो जाने वाला (Short-tempered), तनाव में आ जाने वाला या जल्दबाज़ी की आदत के कारण गम्भीरता से सोचे बिना फैसला करने वाला हो तो वे संसार, देश अथवा समाज के लिए कैसी भयावह एवम् संकटपूर्ण स्थिति को पैदा कर सकता है! रूस और

अमेरिका जैसे राष्ट्रों के मुख्य नेता यदि तनाव में आकर आणविक युद्ध घोषित कर दें तो विश्व ज्वाला में जलकर राख हो जायेगा, यदि सेनाध्यक्ष अपने किसी संस्कार के वश युद्ध छेड़ बैठे तो देश को एक बड़े खतरे में धकेल देगा और यदि एक दैनिक पत्र का सम्पादक उकसाहट भरे सम्पादकीय लिखने लगे या हल्के से समाचारों को उत्तेजक शीर्षक देने लगे तो वो सम्प्रदायों एवम् जातियों को आपस में भिड़ा देगा और यदि ट्रेड यूनियन (Trade union) का कोई लीडर अपने किसी भाषण में अपनी तनाव-पूर्ण स्थिति के कारण श्रोताओं को तोड़-फोड़ अथवा अग्नि-कांड के लिये भड़का दे तो कितनों की जान हानि होगी और देश की कितनी सम्पति नष्ट हो जाएगी! ये बड़े लोग तो अपने मानसिक रोग से बड़ी हानि पहुँचा सकते हैं परन्तु अन्य लोग भी समाज में पीड़ा के निमित्त तो बनते ही हैं। स्पष्ट है कि इन मानसिक रोगों, जो कि नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण पैदा होते हैं, का इलाज करना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है क्योंकि ये तो सारे समाज को ही रोगी बना देते हैं। सच पूछिए तो वास्तविकता ये है कि आज बड़ी-बड़ी सेनाओं का होना, बड़े-बड़े अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण अथवा उनको जमा किया जाना, जगह-जगह पुलिस की आवश्यकता महसूस करना, जेलों, न्यायालयों और अस्पतालों का अस्तित्व इस बात का आकाटय प्रमाण है कि हमारा समाज रोगी हो चुका है अथवा कि वर्तमान सभ्यता अपनी रूग्ण अवस्था में हमारे सामने है। बाहर से दिखाई देने वाली चकाचौंध के पीछे दुःख भरा हुआ है, अशान्ति है, मन की एक अविरत पीड़ा है, मानवता आज मानसिक स्वास्थ्य की भीख माँग रही है। विश्व शान्ति का नारा ही इस बात का परिचायक है कि संसार अनैतिकता के कारण अथवा आध्यात्मिक रूग्ण अवस्था के कारण अस्वस्थ है।

तब किया क्या जाये? जब सारा संसार रोगी हो चुका है, तब उसका इलाज क्या है? संसार को सुखमय बनाने के लिये डाक्टर वर्ग क्या करे? और लोग उसमें क्या सहयोग दें?

इस विषय में दो ऐसे सुझाव दिये जा सकते हैं जो सहज पालनीय हैं।

हम देखते हैं कि दवाईयों के डिब्बो में शीशीओं के आस-पास औषधि अथवा उपचार के बारे में एक कागज़ छपा हुआ रखा होता है ताकि उस औषधि को प्रयोग करने वाला व्यक्ति उन्हें पढ़ ले। परन्तु वो ऐसे बारीक अक्षरों में होता है और ऐसी भाषा में भी कि प्रायः रोगी उसे अपने पढ़ने के लिए नहीं समझता बल्कि दवाई की पब्लिसिटी मानता है या तो डाक्टर ही के लिए उसका उपयोग समझता है। अब यदि डाक्टर अपने नुस्खे (Prescriptions) के साथ एक छपा हुआ कागज़ (Leaf let) भी साथ लगा दे जिसमें लिखा हो कि रोगी का खुश रहना, चिन्ता न करना, मिलजुल कर चलना, तनाव में न आना, प्रेम से व्यवहार करना आदि उसके स्वास्थ्य के लिए कितने आवश्यक हैं तो रोगी का ध्यान मोटे-मोटे शब्दों में छपे हुए उन परामर्शों (Adivces) की ओर जाएगा। यदि डाक्टर ही मरीज़ को ये छपा हुआ पर्चा देंगे जिसमें बताया गया हो कि शराब का पीना, माँसाहार करना, तंबाकू का सेवन, मिर्च मसालों का आधिक्य, नशीले एवम् उत्तेजक पदार्थों का प्रयोग शरीर के लिए भयानक है तो रोगी उस बात को अधिक मानेंगे क्योंकि वे डाक्टरों की कही हुई बात को प्रायः मानने और पालन करने की चेष्टा करते हैं। यदि डाक्टरों के पास इतना समय नहीं है कि वो व्यक्तिगत रूप से विस्तार पूर्वक इस बात का परामर्श (Consultation) दे सकें तो रोगों के अनुसार दो चार प्रकार के पर्चे छपा कर तो वे अपने पास रख ही सकते हैं और अपने कम्पाउन्डर को आदेश दे सकते हैं कि वो पर्चा नं० १ या २ नुस्खे के साथ संलग्न कर दे। इससे रोगी का भी भला होगा और डाक्टर भी मानवता की कुछ सेवा कर पाएगा। यदि डाक्टर सेवा के नाते रोगियों को ये पर्चा नहीं दे सकते तो कम से कम अपने बिल में इस पर्चे की भी कीमत जोड़ कर रोगी के भले का प्रयत्न कर सकते हैं।

दूसरा सुझाव ये है कि वो रोगी को ये सुझाव दे सकते हैं कि रोग के मानसिक कारणों का इलाज करने के लिए किसी कुशल संस्था से नैतिक अथवा आध्यात्मिक बातों को सुनें और मनोयोग अथवा बुद्धियोग, ध्यानयोग (Meditation) सीखें और प्रतिदिन उसका अभ्यास करें। यदि केवल इतना ही किया जा सके तो धीरे-धीरे इससे ऐसा वायुमंडल हो जाएगा कि लोग अपने जीवन को इन नियमों को पालन करते हुए परस्पर सहयोग से एक सुखमय संसार का निर्माण कर लेंगे।

— जगदीश

अब विकारों की होलिका जलाओ

भारतवासी हर वर्ष होली के अवसर पर लकड़ी का ढेर लगाकर और गोबर के बर्कुला और ढाल इत्यादि बनाकर जलाते हैं और होली मनाते हैं। इस प्रकार की होली जलाने से कोई आध्यात्मिक उन्नति तो होती ही नहीं है। अतः परम-पिता परमात्मा शिव कहते हैं कि अब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों को चुन-चुनकर इकट्ठे ही इनके ढेर को तथा ईर्ष्या, द्वेष रूप गोबर को ज्ञान तथा योग की अग्नि से जला डालो। 'अब विकारों की होलिका जलाओ।' इस प्रकार होली मनाने से सदा उत्सव ही मनाते रहोगे अर्थात् सुखी, स्वस्थ और शान्ति-सम्पन्न हो जाओगे।

"तेरे प्यार का बदला चुकायेंगे हम"

—ब्रह्माकुमार सूरज कुमार, आबू-पर्वत—

भक्ति में हम कीर्तन करते थे—'हे भगवन! हमने तुम्हें कब से बुलाया है, तुमने बड़ी देर लगाई है, बड़ी इन्तज़ार कराई है, ज़रा एक बार तुम आ जाओ, हम तुमसे गिन-गिन के हिसाब लेंगे···।' जिसको बुलाते थे वह सम्मुख है और याद दिलाता है—'बच्चे, मैं आ गया हूँ। मुझसे गिन-गिन के हिसाब ले लो। तुम्हारे प्यार का बदला देने मैं भी आ गया हूँ। जो भी चाहो, मुझसे ले लो।' कौनसे हैं वे वत्स जो प्रभु-प्रेम में मग्न हैं? यह विशुद्ध ईश्वरीय स्नेह केवल एक बार ही मिलता है। इसके समक्ष संसार के सारे प्यार फीके पड़ जाते हैं। यह प्यार कुछ पुण्य आत्माओं पर ही बरस रहा है और कोटि-कोटि मनुष्यों में से कुछ ही इस प्यार में मग्न होकर परम आनन्द प्राप्त कर रहे हैं।

हम ज़रा विचार करें, अन्तर्मुखी होकर महसूस करें—'कितना प्यार है हमारे अलौकिक माता-पिता का हमसे! यदि सच कहें तो हमें अहसास भी नहीं है कि उसका हमसे कितना प्यार है। इस प्यार को हम उनके इन शब्दों से जान सकते हैं—**"जब वतन से बाप बच्चों की कमियाँ देखते हैं, तो ब्रह्मा कहते हैं शिव को-ये बच्चों की कमियाँ नहीं हैं, मेरी कमियाँ हैं, मैंने अभी तक इनकी पूरी पालना नहीं की है।"** यह है सच्चा प्यार···परन्तु क्या हम इस प्यार को महसूस करते हैं?···क्या हम जानते हैं कि वे दोनों हमें कैसा देखना चाहते हैं?··· क्या हम इस प्यार का बदला चुकाने को तैयार हैं?···

सच्चे दिल का प्यार अर्पित हो उस दिल के सहारे शिवबाबा पर··· यह प्यार जो एक सच्चे दिल में ही उमड़ता है, जिस विशुद्ध प्रेम की लहरें तन-मन में जागृति पैदा करती हैं, ऐसा प्यार उस सच्चे प्रियतम के लिए जो अपने प्रेम के धागे में सबको पिरोये हुए है। इस प्यार के सिवाय हमारे पास है भी क्या··· यदि अपना सच्चा प्यार भी हम उस पर अर्पित न कर पायें तो केवल फल अर्पित करने का क्या महत्व?

प्यार से झोलियाँ भरने वाला भगवान हमारे द्वार पर आया है, इस प्रेम में अपने सर्व खज़ाने हमें देने। इस प्यार में हम सर्व वरदान प्राप्त कर लें। राज़ी हो गया है भगवान हमारे सच्चे दिल पर, हमारी जन्म-जन्म की पुकार पर, हमारी जन्म-जन्म की भक्ति पर···तो कौन ऐसा बुद्धिवान व्यक्ति होगा जो द्वार पर खड़े प्रभु से सर्व वरदान प्राप्त नहीं करना चाहेगा? माँगने की भी जहा आवश्यकता नही, जो स्वय ही हम सब शक्तियों का अधिकारी बना रहे हैं।

कितनी ममता है हमारी बड़ी मां की—

हमारी बड़ी माँ प्रजापिता ब्रह्मा, जिनके मुख से निराकार शिव परमात्मा ने हमें पैदा किया, हमसे कितनी ममता रखती है! वे सदा ही हमें अपनी नज़रों में छुपाये रहते हैं, अपना बल देकर हमें माया से मुक्त रखते हैं, अपनी छत्रछाया लगाकर हमें सुरक्षित रखते हैं। ऐसी ममतामयी माँ को कैसा लगता होगा, यदि उसके बच्चे आपस में लड़ें··· यदि उसके महावीर सपूत माया से मूर्छित हो जाएँ··· यदि उसके सुखकारी बच्चे दूसरों को दुःख पहुंचाएँ और यदि भगवान के बच्चों का जीवन उदासी व निराशा से भरा हो··· क्या उन्हें लज्जा नहीं आती होगी? वे तो चाहते हैं उनके बच्चे भिखारी नहीं भरपूर हों, सुखदायी हों, कल्याणकारी हों ताकि संसार हम रूहों में रूहानी बाप के दर्शन कर सके।

हम याद करें उनके दिल को छूने वाले ये बोल—**"जब वतन में बाप-दादा बच्चों की व्यर्थ वार्तालाप व परचिन्तन सुनते हैं तो ब्रह्मा बाबा शिव बाबा को कहते हैं कि इन बच्चों को अपनी महानताओं का व जिम्मेवारियों का भी नहीं पता, इन्हें ये भी नहीं पता कि बाप बाहें पसारे इनका इन्तजार कर रहा है।"** यदि ऐसे प्यार भरे वचन सुनकर भी कोई अपनी वाचा को सुमधुर न बनाये तो उसे अति कठोर दिल ही कहा जाएगा जिसे धर्मराज जलते तेल में डालकर ही नर्म करेगा।

बाबा कहते—'जब भी व्यर्थ बोल निकले तो चिमनी याद करो कि मुख रूपी चिमनी से धुआं निकल रहा है।' हम विचार करें कि **फैक्टरी से निकला धुआँ तो आकाश तक ही पहुँचता है परन्तु हमारे मुख से निकला व्यर्थ बोल रूपी धुआँ वतन तक पहुँच कर हमारे प्राण प्यारे माता-पिता की आँखों को लगता है।** कैसा लगता होगा उन्हें यह देखकर कि जिन वत्सों को उन्होंने अपने आंचल में छुपाया है, वे उनके प्यार का बदला उन्हें धुँआ देकर चुकाते हैं।

ज्ञान व प्रेम का सन्तुलन रहे

भक्ति में मनुष्य ज्ञान विहीन व भावना प्रधान होता है और दार्शनिक ज्ञान प्राप्त करके वह भावना-विहीन व ज्ञान-युक्त हो जाता है। परन्तु हमें ऐसा सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त है जिससे हमारे जीवन में भावना व ज्ञान का समन्वय हुआ। तो हमें देखना है कि ज्ञान प्राप्ति के बाद जीवन भावना व प्रेम से रिक्त न हो जाए, ज्ञान जीवन में विवेक वृद्धि करके कहीं अहं को जन्म न दे दे? जहाँ विवेक में प्रेम का समावेश नहीं, वहाँ विवेक सूखापन लाता है। अतः हम अपने मन को ईश-प्रेम से सम्पन्न कर दें और

बुद्धि को विवेक से दिव्य कर दें। इन दोनों की धारणा ही हमें योग का सच्च आनन्द प्राप्त करायेगी।

'ईश्वरीय प्यार' — योग का आधार

केवल बुद्धि पर आधारित बुद्धि योग कहीं-कहीं कठिनता व नीरसता को जन्म देता है। परन्तु प्यार मनुष्य को मग्न करता है और बुद्धि को सहज ही एकाग्र कर देता है। इसलिए योगानुभूति के मार्ग पर वही साधक परम सुख प्राप्त करता है जो मन में ईश्वरीय प्रेम की तरंगे पैदा करना जानता है। प्यार की लहरें मन की दौड़ को शान्त कर देती हैं और योग एक अभ्यास न रहकर मग्न बनाने का आधार बन जाता है।

तो आओ प्रेम-युक्त चिन्तन से ईश्वरीय प्रेम में मग्न रहें। इसने हमारी जिन्दगी में रस भर दिया··· दुखों के सागर में डगमगाती जीवन को सुख की लहरों में लहराया··· दोस्त बनकर जो हमारे दिल पर आया··· क्या तुम उससे सच्ची प्रीत नहीं निभाओगे? जो तुम्हारा प्रत्येक संकल्प पूरा कर रहा है··· जिसके द्वार से कोई कभी भी खाली नहीं लौटता··· वह तुम्हें सब कुछ दे रहा है, क्या उससे अधिक प्यार तुम्हें और कोई कर पायेगा?

सच्चा प्यार वही है जिसमें दिल कुर्बान हो

आज संसार में दैहिक प्यार की अग्नि दहक रही है और युवापीढ़ी इस अग्नि में जल-जलकर अपने ही लिए उदासी व निराशा की कब्र खोद रही है। ये प्यार उसे जिन्दा ही कब्र में दफना रहा है। ब्रह्मा वत्सों को ऐसे दैहिक प्यार से स्वयं को मुक्त रखना है। युवा योगियों को केवल ईश्वरीय प्यार को ही जीवन का आधार बनाना है।

युवक-युवतियों को समझदारी से काम लेना चाहिए। ईश्वरीय प्यार को पाकर, भगवान की पावन दृष्टि पाकर भी यदि देहधारियों से प्यार किया तो जन्म-जन्म पछताना पड़ेगा और यह जीवन भी निरन्तर उदासी की दुखद खाई में दबी-दबी-सी अनुभव होगी। याद रखो कि मनुष्यों को प्यार करना धोखा होगा। इस ईश्वरीय प्यार के पीछे सभी के प्यार कुर्बान कर दें। लौकिक में भी तो कन्या शादी होने पर, भाई-बहन, माँ-बाप के प्यार को एक के प्यार पर कुर्बान कर देती है। मनुष्यों का प्यार तो जन्म-जन्म मिलता रहेगा, परन्तु प्रभु प्यार पुण्यों का फल है, इसी के लिए ही तो हमने उसे पुकारा था, कष्ट सहे थे और जब वह प्यार बाँटने आया तो हम पीछे हट जाएं तो इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे।

तो आओ, इस प्यार के पीछे संसार को भी कुर्बान कर दें, अपनत्व को भी कुर्बान कर दें, कामनाओं को भी कुर्बान कर दें और अपने दिल को भी कुर्बान कर दें और खो जाएँ···।

प्यार वही है सच्चा जो संसार को भुला दे

वो प्यार भी क्या जो संसार न भुला दे, जो नाते न भुला दे, जो संसार से वैराग्य न दिला दे? लौकिक प्यार में भी तो यही होता है। फिर यह तो भगवान से प्यार है। हमने भगवान से प्यार किया है। जिसे ये नजरें नहीं देखती, जिसे दिव्य नज़रें जानती हैं। तो हम इस प्यार के बदले संसार भूल बैठें। यदि संसार हमें आकर्षित करे, यदि इसके मायावी पदार्थ हमारे मन को लुभायें, यदि इसके मनुष्यों में हमारा लगाव रह जाता है वह प्रभु-प्रेम कैसा! इसमें तो केवल एक भगवन ही अपना रह जाता है बाकि कुछ भी नहीं। कहते भी हैं — **'भगवान से वही प्यार कर सकता है जो मरना जानता हो।'** तो देह से न्यारे बनने वाले, संसार को मृत जानने वाले ही ईश-प्रेम में मग्न हो सकते हैं।

प्यार वही है सच्चा, जो काँटों के कष्ट भी सह ले —

ईश्वर से प्रेम करने वालों पर सितम बड़ी पुरानी बात है। जिसने प्रभु-पथ अपनाया, उसे कष्ट न हो तो वह पथ ही कैसा? जिसे भगवान प्यार करता है, उन्हें संसार गाली देगा ही। परन्तु ईश-प्रेम के रंग में रंगी आत्मा को सितम, सितम नहीं लगते। कष्ट उसे सुखदाई प्रतीत होते हैं। काँटे उसे पुष्प-सम दिखाई देते हैं और ज़हर उसे अमृत लगता है। संसार के कष्ट उसकी प्रेम-अग्नि को और ही तीव्र करते हैं। कष्टों के तूफानों से प्रेम अग्नि दहकती है। ईश-प्रेम मार्ग पर तूफान वरदान हैं। आज तक प्रभु-प्रेम में मग्न रहने वाली सभी आत्माओं को कष्ट झेलने पड़े हैं, परन्तु दिल से उनका प्रभु-प्रेम कम नहीं हुआ। वास्तव में कष्ट ही तो ईश-प्रेम की कसौटी है। तो तुम्हें भी यदि प्रभु-प्रीत की रीति निभाने में कष्ट झेलने पड़ें, तो हँसते-हँसते झेलो। ये कष्ट तुम्हें महावीर बनायेंगे, तुम्हारे मार्ग को सरल बनायेंगे।

ईश्वरीय प्यार की पहचान

हम सभी कहते हैं कि हमारा शिवबाबा से सम्पूर्ण प्यार है। है भी सत्य। परन्तु इस प्यार की पहचान क्या है? क्या यह प्यार मुख तक कहने का प्यार है या इस प्यार का स्वरूप कुछ और है?

• ईश्वरीय प्यार एक बल है, जो हमें बाप समान बनने की सामर्थ्य देता है। जिसका जितना अधिक प्यार ईश्वर से होगा, उसका उतना ही उसकी रचना व उसके कर्त्तव्य से प्यार होगा। ऐसे नहीं कि कोई कहे तो यह कि **"मेरा तो एक बाबा ही संसार है"** और मनुष्यों से लड़ते रहें। रूहों से व्यवहारिक प्यार ही सच्चे ईश्वरीय प्यार का लक्षण है। इसी तरह ऐसी स्नेही आत्मा ईश्वरीय कार्य में भी सम्पूर्ण सहयोगी होगी।

• जैसा प्रियतम, वैसा ही प्रेमी होगा। वह उसकी हर बात की

कॉपी करेगा। इस प्रेम में उसे फॉलो करना भी सहज होगा अर्थात् ईश्वर से हमारा सच्चा स्नेह है, तो हम जल्दी-जल्दी उन जैसा बन जाएंगे।

• ईश्वरीय प्यार हमें निरन्तर योग-युक्त बनायेगा। शिवबाबा के अतिरिक्त हमें अन्य कुछ भी नज़र नहीं आयेगा। योग सहज व स्वाभाविक होगा।

• इस प्यार में उसकी सभी आज्ञाएँ हमें शिरोधार्य होंगी। यदि उसकी आज्ञा पालने में हम अलबेले हैं तो यह सच्चा प्यार नहीं। इस प्यार में हम सहज ही हर तरह की कुर्बानी भी कर देंगे व सदा ही उनकी हर आशा को पूर्ण करने में गर्व महसूस करेंगे।

• इस ईश्वरीय प्यार में कुछ भी कुर्बान करने में हमें भय नहीं होगा। हम यह भी चिन्ता नहीं करेंगे कि हमारा क्या होगा? यह प्रेम हमें निर्भय बनाता है। जो भगवान से प्यार करता हो, उसे इस संसार में भय किसका?

• प्रेमी सदा वहीं रहना चाहेगा, जहाँ उसका प्रियतम होगा। यह कैसा प्रेम कि वह सूक्ष्मलोक में रहता हो और हम धरती पर! हमारा उसके बिना मन कैसे लगेगा? तो यदि हमारा उससे सच्चा स्नेह है तो हम भी वहीं रहें जहाँ वह रहता है। वह हमें निमन्त्रण भी देता है कि 'बच्चे, मेरे वतन में ही आकर रहो। बहुत जन्म तुम इस दुनिया में रहे हो, अब मेरे पास आकर विश्राम करो।' तो हम उनका यह प्यार भरा निमन्त्रण स्वीकार कर लें। यह उनसे हमारा सच्चा प्यार होगा।

• ईश्वरीय प्यार में रंगी आत्मा, सहज ही ईश्वर से सर्व सम्बन्धों का रस ग्रहण करती है। प्यार में परम आनन्द स्वतः ही मिलता है।

तो आओ, इस प्यार में बलिहार हो जाएँ हम··· संसार को भुला दें हम··· कष्टों को खेल बना दें हम··· उसकी छवि अपने दिल में ऐसी बसाएँ जो संसार देख सके··· प्यार का ऐसा आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करें जो संसार के क्षणिक प्यार मृत-सम प्रतीत हों। इस प्यार को जीवन का आधार बना लें··· जीवन का बल बना लें··· तब ही वह प्यार का भूखा भगवन हम पर बलिहार होगा, हम पर राज़ी होगा और हमारे जीवन को वरदानों से भरपूर कर देगा। इस प्यार में हम उसकी सभी श्रेष्ठ कामनाओं को पूर्ण करने का संकल्प लें और इस परम पवित्र प्यार का बदला, अपने वचनों से सभी पर सुख व प्यार बरसा कर दें।

कविता

स्वस्थ तन का मन्त्र

प्रिय बन्धुओ! परमात्म प्रेमियो!
स्वच्छ जीवन का दर्शन कराते हैं।
प्यारी बहनो! मेरे प्यारे भाइयो!
हम स्वस्थ तन का मन्त्र बताते हैं।।

आशा से उत्तम नहीं ज्योति कोई,
निराशा से बढ़कर नहीं मौत कोई।
हर हाल में अपनी हिम्मत न हारो,
तो फिर लौट आयेगी शक्ति जो खोई।

साहस रखो, मन में धीरज धरो,
ये सफलता का बोध कराते हैं
प्यारी बहनो·····

संयम-नियम ज़िन्दगी की है शोभा,
विषयों से मन नित्य निर्बल ही होगा।
यदि चाहते दिव्य जीवन बनाना, तो
मर्यादा का मान रखना ही होगा।

पावन बनो! राजयोगी बनो!
द्वार सुख-शान्ति का यह दिखाते हैं
प्यारी बहनो·····

ब्र०कु० सतीश कुमार, आबू

अमृतसर – ५२ वीं शिवजयन्ती पर आयोजित एक शिक्षाप्रद मनोरम झांकी का उद्घाटन ब्रह्माकुमारी राज बहन तथा दादी चन्द्रमणी जी ५२ मोमबतियां जलाकर कर रहे हैं।

'क्रोध' – मानव जीवन का अभिशाप

ब्रह्माकुमार रमेश, आबू-पर्वत

आज से नहीं पुरातन काल से ऋषि-मुनियों ने क्रोधाग्नि पर अनेक व्याख्याएं की हैं और जिसने क्रोध पर विजय पाई वह इस संसार में महान् बन गये। उनके आगे आज भी मानव नत मस्तक हो जाता है। उन महान् पुरुषों के क्षणिक संग से अन्य प्राणियों का भी क्रोध नष्ट हो गया। प्राचीन ऋषि मुनियों की गाथाओं के अनेकों उदाहरण हमारे धर्म शास्त्रों में आज भी मौजूद हैं कि शेर भी उनके आश्रम पर उनके समक्ष आकर बिल्ली की भांति बैठ जाते थे। यह उनके क्रोधाग्नि पर विजय एवं शान्ति की शक्ति का प्रमाण ही है। महात्मा तिरूवल्लवर ने तो बड़े ही सुन्दर शब्दों में कहा है कि **'आग के पास जाने से आग जला देगी, लेकिन क्रोधाग्नि तो सारे कुटुम्ब को ही जला देगी।'** अगर मानव क्रोध को छोड़ दे तो उसकी सारी इच्छायें शीघ्र ही पूर्ण हो जायेंगी जीवन आनन्द से भर जायेगा।

क्रोध मन का कांटा है जो बार-बार खटकता रहता है जिस कारण मानव दुःखी, अशान्त एवं पागल-सा हो जाता है। क्रोध की उत्पत्ति होते ही मनुष्य कांपने लगता है, उसका चेहरा ही बदल जाता है, आंखें लाल हो जाती हैं और उसको देखने से अन्य को भी भय लगता है। उसका चेहरा भयानक हो जाता, वह अपने पर नियन्त्रण नहीं रख सकता।

क्रोध काले सांप की तरह मनुष्य को बार-बार डसता रहता है। वह मन के अन्दर बिल बनाकर बैठा है। समय आते ही वह फफकारने लगता है, स्वयं के बुद्धि रूपी दीपक को बुझा देता है और अन्य पर भी हावी हो जाता है।

क्रोध ज्वाला है जो मनुष्य के विवेक को जलाती रहती है। उसे चिता की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि स्वयं के अन्दर क्रोधाग्नि रूपी चिता जलती रहती है। जैसे सुकरात बड़े शान्त और क्षमा की मूर्ति थे मगर उनकी पत्नी उतनी ही क्रोधी स्वभाव की थी। एक बार किसी कार्यवश सुकरात देरी से घर लौटे। उनकी पत्नी ने चावल बना रखे थे और वह ठण्डे हो गये थे। सुकरात के आते ही उसका क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। उसने चिल्लाते हुये कहा — 'इतनी देर तक बाहर रहते हो, मैं कहाँ तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँ? चावल ठण्डे हो गये हैं, अब कैसे खाये जाएंगे?'

सकरात शान्त चित्त हो सनते रहे। फिर शान्ति से बोले — 'चावल ठण्डे हो गये हों तो कोई बात नहीं। तुम अपने सिर पर भात की कड़ाही रख दो, गर्म हो जायेंगे।'

पत्नी ने क्रोध से पूछा — कैसे हो जायेंगे? वहाँ आग थोड़े ही है।

सुकरात ने कहा — तुम्हारे सिर में क्रोध की आग है न, उसी से यह गर्म हो जायेंगे। आग जलाने की क्या जरूरत है?

सुकरात की पत्नी यह सुनकर हंस पड़ी और अपने पति का नम्र स्वभाव देख कर उसका भी क्रोध शान्त हो गया। ऐसे कई ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने हैं।

क्रोध एक भयंकर अग्नि है जो समाज को भी बरबाद कर देती है। शहर क्या देश को भी तबाह कर देती है। बड़े-बड़े राजाओं को भी क्रोध के कारण अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा। क्रोध जब आता है, तूफान के समान आता है जो सर्वनाश कर देता है। जैसे दुनिया में तूफान उठता है तो बड़े-बड़े पेड़ धराशायी हो जाते, सारे गाँव में तहलका मच जाता है। **तो क्रोध रूपी तूफान के कारण भी सारे दिव्य गुण समाप्त हो जाते, विवेक नष्ट हो जाता, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती, चिन्तन शक्ति समाप्त हो जाती है।** क्रोध के कारण शरीर का भी ह्रास हो जाता है एवं अनेक बीमारियां लग जाती हैं। कभी-कभी क्रोध की अति होने के कारण मृत्य की भी संभावना है।

डॉ० जे० एस्टर का कथन है कि **१५ मिनट क्रोध करने से शरीर की इतनी शक्ति खर्च हो जाती है कि उतने से साढ़े नौ घन्टे तक परिश्रम किया जा सकता है।** अगर कोई एक घन्टा क्रोध करेगा तो उसके अन्दर कार्य करने की क्षमता ही समाप्त हो जायेगी।

इसलिये इस क्रोध रूपी अग्नि को बुझा दो। दूध की मक्खी की तरह क्रोध को मन से निकाल फेंको। इसके लिये क्षमाशील बनो, मैत्री भाव रखो, क्रोध को प्रेम से जीतो। क्रोध के आने से पहले शान्त हो जाओ। क्रोध को समाप्त करने लिये शान्ति के सागर परमात्मा शिव के चिन्तन में अपने मन को लगा दो, आत्म चिन्तन में चले जाओ, महान् पुरुषों का संग करो तो एक दिन यह क्रोधाग्नि शान्त हो जायेगी। जीवन दिव्य गुणों से महकने लगेगा और प्रेरणादायक बन जायेगा और आप सच्चे स्वर्ग के अधिकारी बन जायेंगे।

सेवा करना सौभाग्य की निशानी है, सेवा के लिए न करना नास्तिकता है।

श्रेष्ठ मानव-जीवन का आधार–'सहयोग'

'सहयोग' देना एवं सहयोग लेना जीवन चक्र का विधान है। इस विधान के अनुरूप आत्मा एवं प्रकृति दोनों के परस्पर सहयोग से संसार में जीवन चक्र चलता है। नीति शास्त्रों में भी कहा गया है –

जातस्य नदी तीरे तस्यपि, तृणस्य जन्म साफल्यम्
यत् सलिल मज्जनाकुल, जन हस्तालंबनं भवति।

अर्थात् नदी किनारे जन्म लेने वाले तृण का जीवन सफल तब ही कहा जायेगा जब वह उस नदी प्रवाह में डूबने वाले व्याकुल मनुष्य के हाथ का सहारा बने क्योंकि डूबते हुए मनुष्य के लिए तिनके का सहारा ही जीवन बचाने का साधन बन जाता है।

इसी प्रकार वर्तमान समय विषय सागर में डूबे हुए मनुष्य को थोड़े से सहयोग की आवश्यकता है। वह सहयोग न केवल उसके जीवन का कल्याण करेगा लेकिन इस दुःखी अशान्त संसार को परिवर्तन करने में भी मदद करेगा। मनुष्य का यह अमूल्य जीवन है ही दूसरों के सहयोग के लिए। **दूसरों के कल्याण के लिए अपने संकल्प, बोल एवं कर्म का सहयोग देना ही सच्चा मानव धर्म है।** एक दूसरे के सहयोग से मनुष्य शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक आदि सर्व समस्याओं का समाधान कर अपने जीवन को निर्विघ्न बना सकता है। अगर मानव सहयोग के इस महत्व को जान जीवन में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्जवलित कर कर्म करे तो वह दुःख-अशान्ति, कलह-क्लेश वाली दुनिया को सदा के लिए सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम सम्पन्न, दैवी, सखदाई संसार बना सकता है। जब-जब मानव धर्म-भ्रष्ट एवं कर्म-भ्रष्ट होकर मानवता की प्रगति में समस्या रूप बना है तब जिन आत्माओं ने अपने त्याग एवं बलिदान से समाज में आध्यात्मिक भावना, धार्मिक विचारधारा एवं नैतिकता के मूल्य बोध को सम्पूर्ण विलप्त होने से बचाने में अपना सहयोग दिया। उन श्रेष्ठ धर्म-आत्माओं, महात्माओं को मानवता के इतिहास ने आज तक अपने विशाल दिल में अमरत्व का स्थान दिया है, उनसे विचारों में भिन्नता होते हुए भी सदा उनके सहयोग को याद कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

लेकिन मानव जीवन को सम्पूर्ण सुखी बनाने एवं दुःखी अशान्त संसार को सुखमय संसार बनाने में ईश्वरीय सत्ता का सहयोग अविस्मरणीय है। मानवता को धर्म एवं कर्म की शिक्षा देने वाली सर्व-शास्त्र-शिरोमणी गीता इसका यादगार है। मन्दिरों में शिवलिंग, भक्ति में स्मरण होने वाला 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र, हमें उस सत्य कल्याणकारी ईश्वर पिता की याद दिलाता है जो जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त होने वाले सच्चे सनातन मानवधर्म को पुनः नई दिशा देकर सर्व आत्माओं को अपने स्वधर्म में स्थित कराता है तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्योति को पुनर्जागृत करने के लिए आत्माओं में ज्ञान घृत डालता है। श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए ज्ञान एवं शक्ति का सहयोग देने के साथ-साथ वह स्वयं प्रत्यक्ष सेवाधारी बन सहयोग देकर सहयोग लेने की विधि सिखाता है जिस विधि से यह पंकिल (किचड़) समान दुनिया पंकज समान न्यारी, प्यारी, सुन्दर एवं सुखदायी स्वर्ग बन जाती है।

सहयोग शक्ति को व्यवहार में लाने के लिए सदा सर्व के प्रति कल्याणकारी दृष्टि, बेहद की वृत्ति एवं जीवन में त्याग, तपस्या और निष्काम सेवा-भावना होना ज़रूरी है। भातृत्व भावना या वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से सम-दृष्टि धारण कर सर्व को, समभाव से अपना सहयोग दे सकते हैं। इसलिए सबसे पहले आध्यात्मिक शक्ति का विकास होना आवश्यक है जिसकी सहायता से हम अपनी कर्म इन्द्रियों एवं आत्मा की सूक्ष्म शक्तियों को नियंत्रित कर सकते हैं और अपनी सहयोग शक्ति को सही दिशा में क्रियान्वित कर सकते हैं।

मानवता को सहयोग देने में मनुष्य की विशेषतायें एवं कलाएं भी विशेष भूमिका निभाती हैं क्योंकि मनुष्य आदि-काल से कलाप्रिय रहा है। उस अनुरूप **महान् कलाकार एवं विचित्र चित्रकार परमात्मा ने भी हर मानव के अन्दर कोई न कोई विशेष गुण या विशेषताएं भर दी हैं।** मनुष्य सृष्टि रूपी चैतन्य बगीचे में यह सब कलाएं गीतकार, संगीतकार, चित्रकार, कवि, लेखक, साहित्यकार आदि अनेक प्रकार के रूप, रंग और सुगन्ध से अपनी-अपनी शोभा बढ़ाते हैं। कला के प्रति अभिरूचि होने के कारण इस माध्यम से मिले हुए हर सन्देश या शिक्षा को मनुष्य-मात्र अपने जीवन के साथ तुलना करता रहता है। इसलिए इन सब कलाओं द्वारा मानव के मन में आध्यात्मिक चेतना जागृत करना ही कलाओं द्वारा सहयोगी बनना है जिससे जीवन सुखमय बन जाता और दूसरों में छिपी हुई कलाओं को विकसित करने में सहायक बन जाता है। इसलिए अपनी कलाओं को ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर सार्थक बनाने के साथ दूसरों के जीवन के अन्धकार को मिटाने के निमित्त बनो। अगर हर एक आत्मा अपनी कला एवं विशेषताओं का सहयोग देवे तो आने वाला विश्व सर्व विशेषताओं पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न और सर्व कलाओं से परिपूर्ण हो जायेगा जिसको सुखमय संसार या सतयुग कहते हैं।

सहयोग देने या लेने का आधार कोई ना कोई शक्ति होती है जिस शक्ति के बिना सहयोग का अस्तित्व नहीं है क्योंकि व्यक्तिगत या समष्ठीगत जीवन में कर्म करने के लिए हमें कोई न कोई शक्ति की आवश्यकता होती है। यह शक्ति तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा या समय-सम्बन्ध और सम्पर्क की हो सकती है। इन सभी शक्तियों के सहयोग की हमें जीवन के हर क्षेत्र में ज़रूरत पड़ती है। अपने प्रति या दूसरों के प्रति कार्य में सहायक बनने वाली इन शक्तियों को स्व तथा अन्य के जीवन में श्रेष्ठता लाने के कार्य में लगाकर विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनना ही शक्तियों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना है। इन सब शक्तियों से सहयोगी बनना अर्थात् शक्तियों में वृद्धि करना। "धन दिये धन ना खुटे"—ये ईश्वरीय विधान है। समय पर हम अगर अपनी इन शक्तियों से ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं तो आने वाले सुखमय संसार में हमें कंचन काया, निर्मल मन, अपार धन, प्रेम भरा सम्बन्ध-सम्पर्क २१ जन्मों के लिए अधिकार के रूप में मिलता है। 'एक देना-लाख पाना'—इसीलिए तो गायन है। अत: अपनी सर्व शक्तियों सहित ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बन श्रेष्ठ भाग्य को प्राप्त करो।

किसी भी प्रकार का सहयोग सार्थक तब होता है जब सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले के साथ-साथ अन्य आत्माओं की भावनायें भी उसके प्रति शुभ हों। इसलिए शुभ भावना एवं शुभ कामना का सहयोग अनिवार्य है। अत: अन्य सर्व सहयोग के साथ-साथ सदा स्व प्रति तथा विश्व प्रति अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामना का सहयोग देना ही मानवता को अपना महान् सहयोग प्रदान करना है। स्थूल सहयोग न होने पर भी ये सहयोग कार्य करने वालों के प्रति वरदान या आशीर्वाद के रूप में सफ़लता दिलाता है। यह सूक्ष्म सहयोग वातावरण को शुद्ध बनाता है और दूसरों के मन में उमंग-उत्साह बढ़ाता है। समाज में एकता एवं संगठन में शक्ति भरने में शुभ भावना एवं कामना का सहयोग विशेष कार्य करता है, नहीं तो व्यक्ति विघ्न रूप बन जाता है। **क्योंकि भावना अनुकूल संकल्प, और संकल्प प्रमाण कर्म होता है।** अतएव विश्व परिवर्तन तथा मानवता के कल्याण हेतु सदा अपनी शुभ भावना एवं शुभ कामनाओं के द्वारा सहयोगी बनो। नि:स्वार्थ भाव एवं निष्काम भावना ही शुभ कामना एवं शुभ भावना द्वारा सहयोगी बनने में मख्य सहायक होती है।

मेरे प्रिय भाइयो और बहनो! मानव जीवन में नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों की कमी एवं असहयोग के कारण वर्तमान विश्व में अविश्वास, निराशा, भय, तनाव तथा अशान्ति का जो वातावरण बना है, यह समग्र मानवता को पतन की ओर लिये जा रहा है। एक ही धरती पर बसने वाले, एक ही मानव परिवार के सदस्य कहलाने वाले अपने-अपने स्वार्थ एवं प्रभुत्व के कारण लड़ाई, झगड़ा, मारामारी, खून-खराबा कर स्वयं को दु:खी, अशान्त करने के साथ-साथ विश्व में अशान्ति का वातावरण फैला रहे हैं। मानवता को इस संकट से उबारने के लिए मानव जीवन में एवं विश्व परिवर्तन में सहयोग के महत्व को जानो, ईश्वरीय सहयोग को पहचानो एवं परमात्म-विधि को अपने जीवन में धारण कर सहजयोगी और सहयोगी बन किसी न किसी रूप से ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग दो। इस समय आपका एक कदम का सहयोग आपको पदम कदमों का सहयोग एवं आशीर्वाद दिलायेगा क्योंकि स्वयं निराकार, निरअहंकार परमपिता परमात्मा शिव विश्व सेवाधारी बन आपकी सेवा कर रहे हैं। उनके द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा से अपना जीवन परिवर्तन कर विश्व परिवर्तन के कार्य में ईश्वर को सहयोग दो। स्वयं ईश्वर आपका सहयोग मांग रहा है, अपने लिए नहीं आपके लिए। क्योंकि सहयोग देना ही सहयोग लेना है—यह ईश्वरीय विधि और विधान है।

हल्द्वानी (नैनीताल) में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में उपस्थित भ्राता एन० एस० रावत, भू० पू० ब्रिगेडियर तथा बी० के० भाई-बहनें दिखाई दे रहे हैं।

कटक — 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित 'धार्मिक सम्मेलन' का उद्घाटन महाराज दिव्य सिंह देव जी तथा 'समाज' के सम्पादक डा० आर० एन० रथ जी मोमबत्ती प्रज्जवलित कर कर रहे हैं। ब्र० कु० बहनें ईश्वरीय स्मृति में मग्न हैं।

कर्म कौशल

ले० ब्रहमाकुमारी सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

कर्मण्य वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन् – कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कराने वाली ये अनूठी युक्ति है। परन्तु जब शब्दशः इसका अर्थ लिया गया कि कर्म किये जायें और फल की इच्छा उत्पन्न न हो तो इससे विवादस्पद स्थिति का प्रादुर्भाव हुआ। इसका यथार्थ भावार्थ न समझ सकने के कारण, कर्म के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण को 'उदासीन दृष्टिकोण' की संज्ञा दे दी गई। ये कहा गया कि जब फल की इच्छा ही नहीं करेंगे तो जीवन में सर्व उन्नति के साधन ही समाप्त हो जाएंगे। जो मिला, जैसा मिला, उसी में सन्तुष्टता और फल की अनिच्छा, प्रगतिरोधक स्थिति को पैदा करेगी। ऐसी मनोःस्थिति वाले व्यक्ति कर्मों की गति की इस युक्ति के प्रति अपना नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है, – क्या सचमुच फल की इच्छा मत कर, ये ईशारा निष्क्रिय बनाता है? और दूसरी तरफ़ क्या फल की इच्छा के बिना कर्म का संकल्प भी कोई करेगा? अगर फल की स्मृति ही हमसे कर्म कराती है तो फिर परमात्मा ने हमें "----मा फलेषु कदाचन्" – ये शिक्षा ही क्यूँकर प्रदान की। हम सब अपने आप को ही देखें। हमारे लिये शिव बाबा ने देवी-देवता बनने के लक्ष्य रूपी फल को सामने रखा है। अगर हम सब फल की इच्छा ही न करें तो हमारा ज्ञान, योग, धारणा, सेवा का पुरुषार्थ ही समाप्त हो जाएगा।

वास्तव में उपरोक्त युक्ति पुरुषार्थ के प्रति उदासीनता उत्पन्न नहीं कराती वरन् **पुरुषार्थ की दिशा** का बोध कराती है। ये हमें समझ देती है कि हमारा लक्ष्य **कर्म की विधि में सम्पूर्णता** प्राप्त करना है। कर्म की यथार्थ विधि प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति स्वतः ही कराती है और यही प्राप्ति भविष्य फल के प्रति निश्चिंत कर देती है। दूसरे शब्दों में भविष्य फल के बारे में सोचना हमारे पुरुषार्थ की दिशा नहीं रहती बल्कि हम अपने क्रिया कलाप को अधिकाधिक सम्पन्न बनाते चले जाते हैं।

लेकिन कई बार यथार्थ विधि के उपरान्त भी, जिस अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति को हम मन में रख कर चलते हैं, वो नहीं होती तो हम चिन्ता करना शुरू कर देते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्सर ये सुनने में आता है कि हमने अपनी तरफ से पूरा पुरुषार्थ किया, सबका सहयोग भी मिला, फिर भी ये समस्या हल नहीं हुई। ऐसी परिस्थिति में हम शिव बाबा के ये महावाक्य समृति पटल पर उभारें – बच्चे, कर्मों की गति अति गहन है, गहन अर्थात् गहरा। और हम ये जानते हैं कि गहराई के स्तर पर जो पदार्थ होता है उसे इन नेत्रों के द्वारा नहीं देखा जा सकता वरन् बुद्धि के द्वारा अनुभव किया जा सकता है। तो कर्मण्येवअधिकारस्ते...का एक पक्ष है कर्म की यथार्थ विधि का पुरुषार्थ और दूसरा पक्ष है त्रिकालदर्शी स्थिति का पुरुषार्थ। श्रेष्ठ कर्म करने के पश्चात् भी अगर वांछित फल की प्राप्ति नहीं होती तो उसकी गहराई में किसी पूर्व कर्म का प्रभाव देखना ही त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ कहलाता है।

अब इस पर कोई फिर से प्रश्न कर सकता है (क्योंकि प्रश्न करने की कोई मनाही तो है नहीं) कि पूर्व कर्मों की आड़ ली जाये तो व्यक्ति धीरे-धीरे निष्क्रिय होता जायेगा। वो अपनी हर असफ़लता के लिये पूर्व कर्मों को ही कूटता रहेगा।

पूर्व कर्मों की स्मृति कर्मगति को क्षीण न करे उसके लिये परमात्मा ईशारा देते – योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात योग ही कर्म की कुशलता कहलाता है। कर्म की यथार्थ विधि के बाद भी अगर असफ़लता प्राप्त होती है तो भी हम रुकें नहीं परन्तु राजयोग द्वारा पूर्व कर्मों को भस्म करने का पुरुषार्थ करें तभी हम 'कर्मण्य वाधिकारस्ते----' के अर्थ स्वरूप में टिक कर कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

'सुखमय होली'

(बी०के० राज कुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

वो जो ऊपर में वतन है न अपना!
आ! ले आएँ गुलाल वहां से शान्ति का इतना!
उतार लें चमक अलौकिक थोड़ी मिलाने को इसमें,
बिखेरने को इस पे, उस पे, हम पे, तुम पे;
हो जाएगी रंगत जो खूब अनचीन्ही अनोखी,
जी चाहता है हो जाए अब ऐसी सुखमय होली
पिछली तो जैसी हो ली सो हो ली!!
वो जो ऊपर में चमकीला बिन्दु बाप है न!
आ! भर लाएँ रंग सुनहरी पावनता का उससे;
सहेज लाएँ सुख अतीन्द्रिय की सौगात साथ में अपने;
फिर छिटकाएं इस पे, उस पे, हम पे, तुम पे;
जल जाए अपावनता पिछली की अब तो होली।
जी चाहता है हो जाए अब ऐसी सुखमय होली।।
वो जो सैम्पल साकार रथ का है न!
आ! ले आएँ फुहार उससे दैवी स्नेह, गुण वर्णन की,
थोड़ी मिलाएँ सुगन्ध शुभ भावों-अलौकिक चलन की,
फिर बरसाएं इस पे, उस पे, हम पे, तुम पे,
भीग जाए हर आत्मा की बुद्धि की चोली;
जी चाहता है हो जाए अब ऐसी सुखमय होली।
पिछली तो जैसी हो ली सो हो ली।।

दोष-दृष्टि

अज्ञानी और ज्ञानी मनुष्य के जीवन में बहुत अन्तर होता है और होना ही चाहिए। अज्ञानी मनुष्य की दृष्टि अपने सम्पर्क में आने वाले हरेक मनुष्य के दोषों पर ही जाती है। वह दूसरे के अवगुणों का चिन्तन करता है और इस प्रकार न स्वयं हर्षित और प्रफुल्लित रहता है और न ही दूसरों को ही मीठी दृष्टि से देखता है। जिस मनुष्य की दृष्टि में जितनी वक्रता और कटुता है मानो कि वह उतना ही अधिक अज्ञानता अथवा विस्मृति में है।

दूसरा व्यक्ति अगर दोषी है तो उसके दोषों का दण्ड वह पायेगा। हम उसके दोषों का व्यर्थ ही चिन्तन करके उसका दुःख स्वयं को क्यों लगावें अथवा हम उसके अवगुणों की माला को क्यों जपें? —ऐसा ही ज्ञानी सोचा करते हैं। अवगुण कम हों या ज़्यादा, हरेक मनुष्य में कुछ तो गुण भी हुआ करते हैं। बुद्धिमान आदमी दूसरों के अवगुणों को छोड़कर गुणों को चुगता है। इसलिए, उसकी दृष्टि गुणों पर ही जाती है।

दूसरों के दोष दिखाई दे भी जायें तो अपने हृदय को प्रसन्न रखने का तरीका यही है कि हम स्वयं में देखें कि स्वयं हम में तो किसी अंश में वह दोष नहीं छिपा है? जैसे दूसरों में वह दोष हमको अप्रिय लग रहा है, वैसे ही हम में भी तो वह दोष दूसरों को अप्रिय लगता होगा। तब क्यों न हम दूसरों के दोषों को देखकर भी स्वयं में से वह निकालें?

हम में वह दोष न भी हो परन्तु जब तक हम देवता नहीं बने तब तक हम में और कोई दोष, ज़्यादा नहीं तो कम, प्रत्यक्ष नहीं तो गुप्त रूप में हो तो सकता ही है। जबकि दोष अप्रिय वस्तु है और हानिकारक है और दूसरों को और स्वयं को चुभने वाला काँटा है तो क्यों न हम भी यह कोशिश करें कि दूसरों के दोषों को देखने की बजाय अपने दोषों को ढूँढकर निकाल दें।

मनुष्य के श्वास का क्या भरोसा है? **जबकि इन्सान की मृत्यु की तिथि और घड़ी मनुष्य को मालूम नहीं तो क्यों न दोषों को आज ही निकाल दिया जाय? अथवा, जबकि "अन्ते या मति सा एव गति" होती है तो दोषों का चिन्तन ही क्यों किया जाय? क्यों न हम साक्षी होकर एक सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा ही के गुणों को देखें, उस ही से गुण लें और दोष-रहित अर्थात् देवता बनें?**

दोषी का दोष देखकर उससे घृणा करना शुभ चिन्ता नहीं कहलाता। यदि तुम्हें उसका दोष अप्रिय है, परन्तु वह स्वयं तुम्हें प्रिय है तो उससे घृणा न होकर के उसके प्रति सहानुभूति होनी चाहिए। किसी मनुष्य को काँटा लगा हुआ हो तो क्या हमें उससे घृणा करनी चाहिए या उस पर दया आनी चाहिए? जबकि परमपिता परमात्मा हम (जो कि दोषी थे अथवा अब भी हैं) पर दया करके हमें ज्ञान-योग द्वारा निर्दोष बनाते हैं (न कि हम से घृणा करके हमें छोड़ देते हैं) तो सिद्ध है कि दोषी से घृणा करना हमारे निर्दय भाव को प्रकट करता है।

किसी के दोष देख कर उससे घृणा करना अथवा सारा समय दोषों की ही दृष्टि अथवा स्मृति में रहना स्वयं एक दोष है। इसलिये जब हम स्वयं अपने में से यह दोष निकाल देंगे तो दूसरे के दोषों को भी निकाल सकेंगे।

कुछ लोगों का ख्याल है कि किसी के ऐबों (दोषों) पर पर्दा डालना चाहिए क्योंकि जैसे गन्द (कचड़े) को खोदना बुरा है वैसे अवगुणों का वर्णन भी अच्छा नहीं।

दोषी का दोष न देखने का यह अभिप्राय नहीं है कि जो मनुष्य अवगुण अथवा आसुरी लक्षण वाला है उसको हम वैसा न जानें, देवता जानें अथवा उसे सर्वगुण सम्पन्न मानें। दोषी को दोषी न मानकर पवित्र मानना तो मिथ्या ज्ञान है। दोष-दृष्टि न रखने का अर्थ यह है कि हम व्यर्थ ही किसी के दोषों का चिन्तन कर अपने अनमोल समय को न गँवाएँ और उस चिन्तन द्वारा अपनी खुशी को न खो बैठें। परमात्मा सर्वगुण सम्पन्न हैं, **'दोष' अथवा 'विकार' माया ही के नाम हैं। अतः जब हम किसी के दोषों अथवा विकारों का व्यर्थ ही चिन्तन करते हैं तो उसका अर्थ यह हुआ कि हम माया से बुद्धियोग लगाते हैं, ईश्वर से विमुख होते हैं।** ऐसा करने से अकल्याण हो जाता है।

दोषों से मनुष्य दुष्ट बनता है और निर्दोषता से इष्ट। दुष्ट सबको अप्रिय और इष्ट ही सबको प्यारा लगता है। परमात्मा को हम इसलिये चाहते हैं और इसलिए 'इष्ट' मानते हैं कि वह सम्पूर्ण निर्दोष और पवित्र है। देवता भी मनुष्य के लिए 'इष्ट' हैं क्योंकि वे निर्दोष मनुष्य हुए हैं। महात्माओं का वन्दन इसलिए होता है क्योंकि उनमें दोष कम हैं। इसलिए दोष-दृष्टि तो अपने ऊपर होनी चाहिए। इससे ही मनुष्य दुष्ट से इष्ट, विकारी से निर्विकारी अथवा मनुष्य से देवता बनता है।

वर्तमान समय एक दोष सभी में है। उस ही के कारण अन्य सभी दोष भी विराजमान हैं। मनुष्य परमपिता परमात्मा को भूल गया है और इस भूल ही के कारण अकर्त्तव्य करता है। अतः **परमात्मा की विस्मृति ही एक ऐसा दोष है जिससे कि संसार में दोष और द्वेष फैला है। इस दोष से कौन बचा है? अतः विचारवान् मनुष्य को चाहिए कि यह दोष निकालने का पुरुषार्थ करे क्योंकि मनुष्य से देवता बनने की यही युक्ति है।** —— शेष पृष्ठ १२ पर

"वर्से की स्मृति से श्रेष्ठ स्थिति"

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, चण्डीगढ़

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर हमें पता चला है कि हमारा भूतकाल और भविष्य एक ही है क्योंकि सृष्टि का वृत्तान्त सरल रेखा की तरह न होकर वृत (चक्र) जैसा है। इसलिए सृष्टि के आरम्भ में जिन स्थूल, सूक्ष्म खज़ानों से भरपूर होकर, तन-मन-धन के सभी सुखों से ओत-प्रोत होकर हमने जीवनयापन किया वही स्थिति हम पुनः प्राप्त करने जा रहे हैं जिसका आधार है इस ज्ञानबिन्दु की निरन्तर स्मृति अर्थात् वर्से की स्मृति। यह हमारे लिए अति स्वाभाविक है क्योंकि भूत और भविष्य के सुखद स्वप्न लेना मानव का स्वभाव है।

स्मृति पर ही पुरुषार्थ और स्थिति निर्भर करती है। एक व्यक्ति जो डाक्टर बनने की पढ़ाई पढ़ रहा है, वह घड़ी-घड़ी कल्पनाओं में खो जाता है कि एक दिन मैं मैडिकल कालेज से स्वर्णपदक लेकर निकलूंगा। विशाल जनसमूह के बीच मुझे सम्मानित किया जाएगा, किसी बड़े चिकित्सालय में मेरी नियुक्ति होगी, सफल डाक्टर के रूप में मेरी प्रसिद्धि होगी, मेरे सामने मेरे प्रशंसकों की भीड़ होगी, आदि-आदि। यही कल्पना उसकी अलसाई आंखों की नींद उड़ा देती है और मेज पर झुकी कमर सीधी कर वह उमंग-उत्साह से पढ़ाई शुरू कर देता है। इसी प्रकार सतयुगी पूज्य देवी-देवता बनना हमारा लक्ष्य है। अन्त के समय सर्वगुणों, सर्वशक्तियों का स्वरूप बनकर हम भक्तों के समक्ष आएंगे, अनेकों को वरदान देंगे, उनकी जन्म-जन्म की परमात्मा-प्राप्ति की, इष्ट मिलन की प्यास बुझाएंगे। हमारी एक झलक मात्र के लिए अनेकानेक भक्तों, पुजारियों,श्रद्धालुओं की भीड़ लगी होगी। यह मनमोहिनी स्मृति आत्मा को जागृत कर सुरजीत कर देती है, उत्साह से भर देती है।

वर्से की स्मृति आत्मा के पारस्परिक स्नेह के आदि संस्कारों को प्रत्यक्ष रूप में ले आती है। हम सभी ब्राह्मण-कुल-भूषण एक ही दैवी कुल के भाती हैं। आदिकाल के स्वर्णिमयुग में एक धर्म, एक भाषा, एक कुल, एक मत के आधार पर एकता में रहे हैं। अब भी उसी स्नेह, सौहार्द में रहना कितना सहज है! भिन्नता के संस्कार तो मध्यकाल की देन हैं जिन्हें न देखना है, न सुनना है, न याद करना है।

नई दुनिया, नए सम्बन्धों, नवीन प्राप्तियों की स्मृति आत्मा को विकारी शरीरों के आकर्षण, वस्तु-वैभव, खान-पान और इन्द्रियों के आकर्षण से सहज ही उपराम कर देती है। उस युग में आत्मा के पास कंचन-सम काया थी पर उसे इस सतोप्रधान, आकर्षक चोले में ज़रा भी मोह नहीं हुआ तो आज के इस विकारी, जर्जर, असुन्दर चोले से मोह हो सकता है? कदापि नहीं। उन सुन्दर शरीरों को सर्प की कैंचुली की भान्ति उतार देने वाली आत्मा वर्तमान शरीर को भुलाने में सक्षम है। ३६ प्रकार के अति स्वादिष्ट व्यन्जनों को खाने की अनुभवी आत्मा यहाँ के किसी पदार्थ में आसक्त नहीं हो सकती। सतयुगी रत्न-जड़ित सिंहासन पर बैठकर कमल नयनों से प्रजा को निहारने वाली, कर्मेन्द्रियों को नियन्त्रित करने के साथ-साथ सारे राज्यभार को सम्भालने वाली आत्मा को कलियुगी तमोप्रधान तत्वों से बनी कर्मेन्द्रियाँ खींच नहीं सकतीं, न ही अपने अधीन कर सकती हैं।

वर्से की स्मृति स्वभाव-संस्कारों के क्षणिक प्रभाव से मुक्त कर सदा सुखदाई स्थिति का अनुभव कराती है। अधिकतर अवस्था ऊपर नीचे होने का कारण है किसी आत्मा के वर्तमान के व्यवहार, बोल, कर्म की कमी को देखना, चिन्तन करना या वर्णन करना। वास्तव में यह उस आत्मा की मूल स्थिति नहीं है क्योंकि आदि, अनादि रूप में सभी आत्माएं सर्वगुणों और शक्तियों से सम्पन्न हैं। वर्से का ज्ञान बिन्दु हमें याद दिलाता है कि वास्तविकता से परे हटी हम आत्माओं का विकृति का यह पार्ट पूरा हुआ कि हुआ और आदि अवस्था आई की आई।

सम्पूर्ण स्वरूप की स्मृति और इसी के साथ जुड़ी अनेक जन्मों के चक्कर, विभिन्न अवस्थाओं के गुजरने की स्मृति आत्मा को सर्व अनुभवों की अथॉरिटी बना देती है, अपने अन्दर अन्तर्निहित गुणों और अनुभवों को बाहर प्रत्यक्ष करने की शक्ति मिलती है। अनेक जन्मों में अनेक कार्यों, कलाओं, गुणों, परिस्थितियों, सम्बन्धों को देखने और निभाने वाली आत्मा यह कह नहीं सकती कि मैंने यह नहीं देखा है या वह नहीं जाना है। **आने वाली नई सतयुगी दुनिया की स्मृति हमें संगम पर ही पूर्ण सुख की अनुभूति कराती है।** नई दुनिया फूलों का बगीचा, शिवालय और स्वर्ग है जिसकी स्मृति मात्र से ही मुरझाई आत्मा को जीयदान मिल जाता है।

पृष्ठ ११ का शेष

जन्म-जन्मान्तर के दोषों ही के कारण तो मनुष्य अब दुःख और अशान्ति भोग रहा है। यह बात तो हमारी ये आँखें भी देखती हैं। दोषी मनुष्य के सिर पर दोषों का बोझ और भी बढ़ता हुआ साफ़ दिखाई देता है। उसके दोषों को देखकर उचित है कि मनुष्य स्वयं भी सावधान हो और दूसरों को भी सावधान करे।

'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' कहावत के अनुसार निर्दोष को सृष्टि में सद्गुण दिखाई देंगे। परन्तु जैसे प्रायः इसका अर्थ लिया जाता है वैसा अर्थ ठीक नहीं है। 'दोष रहित दृष्टि से देखने से सृष्टि का दोषरहित दिखाई देना' वास्तव में इस प्रकार होता है कि जब मनुष्य दोष-रहित दृष्टि से देखने वाले अर्थात् निर्दोष हो जाते हैं तो सारी सृष्टि ही निर्दोष हो जाती है अर्थात् सतयुग आ जाता है।

महानता सत्य की

ले. ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

ईश्वर ही सत्य है । उस सर्वोच्च सत्ता की इस महिमा से भला कौन परिचित नहीं । उस परमप्रिय परमहितैषी की इस विशेषता को मन, वचन और कर्म में धारण करना ही तो हम संगमयुगी आत्माओं का लक्ष्य है । जितना-जितना हम असत्य रूपी बुराई से जनित कुपरिणामों और परिस्थितियों से परिचित होते जाते हैं उतना ही सत्य को अपनाना सहज हो जाता है । इसका अभिप्राय ये कदाचित् नहीं लिया जा सकता कि जब तक झूठ से कोई नुकसान न हो तब तक उससे वैराग्य और सत्य से स्नेह नहीं हो सकता । वरन् इतना समझना ही पर्याप्त है कि जब सत्य ईश्वर की विशेषता है तो कोई भी छोटा अथवा बड़ा कर्म, जो असत्य का पुट लिए हुए हो, ईश्वर से विमुख कर देता है । सत्य की तो इतनी महानता है कि कारणे अकारणे जब कोई विकर्म हम कर बैठते हैं तो सच्चे हृदय से उसका पश्चाताप उस पाप की सज़ा से छुड़ा सकता है । इस पर ही एक वृतान्त प्रसिद्ध है :-

किसी समय एक वन में कुमुद नाम के ऋषि रहा करते थे । एक दिन अपना कार्य समाप्त करने के पश्चात् कहीं से वन वापिस लौटे तो देखा कि कोई अन्य ऋषि उनके वन में लगे वृक्ष से फल तोड़कर खा रहा था । ये दृश्य देखने के पश्चात् वो उनके नजदीक पहुँचे और पूछा - क्या आपने फल ग्रहण करने से पूर्व इस वन के अधिपति की अनुमति प्राप्त की है ? ये बात सुनकर दूसरे ऋषि चौंके क्योंकि वो यहाँ से गुज़र रहे थे तो भूख की व्याकुलता में बिना कुछ सोचे ही फल तोड़कर खाना प्रारम्भ कर दिया । इस पर कुमुद ऋषि ने बताया कि ये उनका ही वन है और वे ये समझते हैं कि बिना किसी आज्ञा से उसकी वस्तु का उपभोग भी चोरी है, पाप है । इसकी सज़ा तो आपको अवश्य भुगतनी चाहिए । ये सुनकर फल खाने वाले ऋषि को अत्यन्त पश्चाताप हुआ और उन्होंने कुमुद ऋषि से स्वयं ही इसकी सज़ा के निर्णय को कहा । परन्तु उन्होंने सुझाव दिया कि सज़ा देने का अधिकार तो राजा के पास है, आप उन्हें अपना अपराध सुनाकर सज़ाप्रार्थी बनिए ।

ऋषि राजा के पास पहुँचे । सारा वृतान्त सुनने के पश्चात् राजा ने कहा कि इतने थोड़े से फल बिना पूछे ले लेना सो भी आप जैसे ऋषि के लिए कोई पाप नहीं है । मैं तो इसकी सज़ा देने में अक्षम हूँ । अगर कुमुद ऋषि इसे चोरी या पाप समझते हैं तो आप उन्हीं से ही क्षमायाचना कीजिए । ऋषि ये सुनकर पुनः वन अधिपति के पास पहुँचे और अपराध की सज़ा माँगी । इस बार कुमुद ऋषि ने जवाब दिया कि – "जाइये, मैंने आपको क्षमा किया ।" पर अब तो अपराधी ऋषि दृढ़ थे सज़ा भोगने के लिए । बहुत देर समझाने पर भी जब वे अपनी बात से नहीं टूटे तो कुमुद ऋषि ने वन से दूर कुटिया में जाकर उन्हें तपस्या करने का सुझाव दिया और कहा कि शायद परमात्मा स्वयं ही क्षमा कर दें । अपराधी ऋषि का ग्लानियुक्त मन तो जैसे प्रतिक्षण उन्हें झकझोर रहा था । भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी की परवाह किये बिना वो कुटिया में जाकर ध्यान मग्न हो गये ।

दो दिन की कठिन तपस्या रंग लाई । अपने अन्दर एक नई शक्ति का अनुभव करते हुए उन्होंने सुना – 'हे वत्स, मैंने तुम्हें क्षमा किया, तुमने सच बता कर अपनी चोरी स्वीकार की, इसी पश्चाताप् ने तुम्हारी आधी सज़ा से तुम्हें मुक्त किया और रही हुई सज़ा इस तपस्या से पूर्ण हुई । अब जाओ, जाकर अपना कर्तव्य फिर से शुरू करो ।

इससे ही हम समझ सकते हैं कि बिना किसी दूसरे की आज्ञा से उसकी वस्तु का उपयोग भी पाप है और ये ईश्वरीय सम्बन्ध का रस लेने से वंचित कर सकता है । सत्य पथ के पुरुषार्थी को तो हल्के रूप से या अनजाने में भी बिना अनुमति पर-वस्तु को छूने से भी भयभीत रहना चाहिए और अगर ऐसा हो भी जाता है तो सच्चे हृदय से सुनाकर उसके पश्चाताप् में ही कल्याण ।

देहली – ब्र० कु० जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर भाषण कर रहे हैं।

पठानकोट—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित डाक्टरों के सम्मेलन में ब्र० कु० आशा बहन डा० जी० एल० कुकरेजा, एस० एम० ओ० को बैज लगा रही हैं।

हरीहर—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का शुभारम्भ ब्र० कु० अनुसूया बहन तथा सहायक कृषि निदेशक भ्राता पी० सी० सिद्दप्पा जी दीप जलाकर कर रहे हैं।

वारंगल में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' के उद्घाटन समारोह में मंच पर (दाएं से बाएं) भ्राता जे० रामचन्द्र राव, निदेशक, दूर संचार विभाग, वारंगल, एम० जी० एम० अस्पताल के अधीक्षक भ्राता बाई० एन० रेड्डी तथा सहकारी बैंक के प्रबन्धक भ्राता चन्द्रमोहन जी विराजमान हैं। ब्र० कु० मोहन आध्यात्मिक बैंक की कार्यविधि पर प्रकाश डाल रहे हैं।

नवरंगपुर में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम का शुभारम्भ यहां के विधान सभा सदस्य भ्राता जगन्नाथ मिश्रा जी तथा शहर के अन्य उपस्थित प्रतिष्ठितगण दीप प्रज्ज्वलित कर कर रहे हैं।

सोलन में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन भ्राता डी० वी० हांडा, ब्र० कु० सुषमा बहन तथा अन्य मोमबती जला कर कर रहे हैं।

आगरा सेवाकेन्द्र पर आयोजित एक समारोह में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' का उद्घाटन दैनिक स्वराज टाइम्स के सम्पादक भ्राता आनन्द शर्मा जी तथा अन्य मोमबतियां जलाकर कर रहे हैं।

'पुराने संस्कारों को पलटाने की सहज विधि'

देवता बनने के लिए पुरुषार्थी मनुष्यात्माओं को दैवी संस्कार धारण करने से ही दैवी जन्म मिल सकता है अर्थात् दैवी तन, दैवी धन और दैवी लोक की प्राप्ति हो सकती है। इसलिए हमें कलियुगी आसुरी संस्कारों को छोड़, सतयुगी दैवी संस्कारों को धारण करते रहने का पूरा-पूरा ध्यान रखना है। अशुद्ध संस्कार ही अपने वेग से मनुष्य से अशुद्ध वचन कहलवा देते अथवा अशुद्ध कर्म करा देते हैं और मनुष्य को जन्म-मरण द्वारा दुःख का भोगी बनाते हैं। इसलिए जीते-जी पुराने संस्कारों को पलटना बहुत ही आवश्यक है।

पुराने संस्कारों को मिटाने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि संस्कार बनते कैसे हैं और मिटते कैसे हैं और उनको मिटाने के लिए किन सावधानियों की आवश्यकता है? वाणी अथवा शरीर द्वारा कर्म करने से पहले तो मन में संकल्प उठता है। यह तो ठीक बात है कि उस संकल्प का अथवा उस द्वारा हुए कर्म का अच्छा अथवा बुरा फल भोगना पड़ता है परन्तु ध्यान देने योग्य एक बात यह है कि संकल्प जितना ही वेग से उठता है, वह उतना ही गहरा संस्कार (प्रभाव) छोड़ जाता है। बार-बार उस प्रकार के संकल्प उठने से वह संस्कार दृढ़ होता है। इसलिए, संस्कारों को बदल, पवित्र बनाने के पुरुषार्थी लोगों को यह जानना चाहिए कि अगर संकल्प इतना तीव्र हो कि वचन अथवा शरीर से भी कर्म करा दे तो उसका संस्कार बहुत दृढ़ हो जाता है। और, **अगर मन में उठे हुए उस संकल्प को, कर्म में आने से पहले ही, पुरुषार्थ से, ज्ञान द्वारा हटा दिया जाय तो धीरे-धीरे इस प्रकार के संस्कार मिट जाते हैं।** तो समझना यह है कि बार-बार अशुद्ध संकल्प को हटाने से वो मिट जाते हैं। **असावधानी, निर्बलता और अज्ञानता से संस्कार अशुद्ध बन जाते हैं और सावधानी, ज्ञान तथा योग शक्ति धारण करने से वह संस्कार पीछा छोड़ जाते हैं और उनकी जगह नये, शुद्ध संस्कार बनते हैं।** परन्तु इस पुरुषार्थ के लिए शुद्ध संस्कारों वालों का संग बहुत ज़रूरी है।

संग का भी रंग संस्कारों पर चढ़ता अवश्य है। शुद्ध संग में बुरे संकल्प नहीं उठते अथवा उठ कर मिट जाते हैं अथवा मनुष्य को सावधानी मिल जाती है। एक-दूसरे के वाचा और शारीरिक कर्मों को शुद्ध देख पुरुषार्थी मनुष्यों के अपने संकल्प भी अशुद्ध से शुद्ध रूप धारण करते जाते हैं। इसलिए अगर आप ज्ञान-अंकुश द्वारा संकल्पों को शुद्ध बनाने का पुरुषार्थ करते रहेंगे और निरन्तर सत्यस्वरूप परमात्मा से संग (योग) जुटाए रखेंगे तो आपके संस्कार सम्पूर्ण शुद्ध अवश्य होते जायेंगे।

संस्कारों को पलटाने के लिए ज्ञान-मुरली की आवश्यकता

जैसे गन्द में पड़े हुए कीड़े को भ्रमरी निकालकर अपने स्थान पर ले जाती है और अपनी भूँ-भूँ से उसे भी भ्रमरी बनाकर, फ़र्श (पृथ्वी) से अर्श (आकाश) में उड़ना सिखा देती है वैसे ही मनुष्यातमाएँ जो कि मानो बुरे संस्कारों की गन्दगी के कीड़े बन गई हैं और उन विकर्मों के बोझ के कारण उड़कर परमधाम को नहीं लौट सकतीं, उन्हें परमात्मा ही अपने साकार रूप (ब्रह्मा) द्वारा ज्ञान की मुरली सुनाकर अपने समान बनाता है। **इस संसार में, कीड़े को भ्रमरी बनाने वाले तो अनेक स्थान हैं और भ्रमरियाँ हैं। परन्तु मनुष्यात्माओं को फ़र्श से उड़ाकर अर्श अर्थात् मुक्तिधाम ले जानेवाली अथवा मनुष्य से देवता बनाकर स्वर्गधाम ले जानेवाली एक अविनाशी भ्रमरी परमात्मा ही हैं जो कि अनेक आत्माओं को अपने समान बना देते हैं।** इसलिए संस्कार बदलने के लिए पारसनाथ की मुरली और उन्हीं का संग अर्थात् योग आवश्यक है। इनके बिना मनुष्यात्मा के संस्कार पूर्ण रीति कदापि पलट नहीं सकते।

पारसनाथ परमात्मा के साथ योग

जब तक परमात्मा के साथ मनुष्य का युक्ति-युक्त योग नहीं जुठा है तब तक उसके संस्कार पूर्ण रीति दैवी हो ही नहीं सकते क्योंकि जैसे चकमक (चुम्बक) लोहे को अपने संग से चकमक बना देता है अथवा पारस अपने संग से लोहे को सोना बना देता है वैसे ही सब आत्माओं में परमप्रिय परमात्मा ही एक ऐसे 'पारस नाथ' हैं जो कि मनुष्यात्मा की बुद्धि को पत्थर से पारस अथवा संस्कारों को आसुरी से दैवी बना देते हैं। जितना-जितना समय कोई मनुष्य योग-युक्त रहता है, उतना-उतना ही उसकी बुद्धि अथवा संस्कार पावन होते जाते हैं।

ज्ञान-नेत्र सदा खुला रहे

ज्ञान का मनन करते रहने वाले मनुष्य के मन में पुराने संस्कार नहीं जागते अथवा कम जागते हैं अथवा दुर्बल होने के कारण शीघ्र भाग जाते हैं क्योंकि ज्ञान के प्रकाश में वे अशुद्ध संस्कार रूपी चोर खड़े नहीं हो सकते। **अशुद्ध संकल्प तो चोर की न्याईं अज्ञान-अन्धकार में ही आते हैं जबकि मनुष्य विस्मृति की निद्रा में सोया पड़ा हो। अतः, इन पुराने संस्कारों अथवा संकल्पों-विकल्पों को नष्ट करने के लिए सदा ज्ञान की गदा धारण किए ही रहना चाहिए, ज्ञान का मनन करते ही रहना चाहिए एवं ज्ञान के नेत्र को सदा खोले रखना चाहिए।**

बुरे संस्कार मानो एक प्लेग की बीमारी के कृमियों की तरह हैं जो कि ज्ञान के इंजेक्शन (टीके) से ही दूर हो सकते हैं।

शेष पृष्ठ २३ पर

माऊंट आबू – विभिन्न नगरों में ब्र०कु०ई०वि० वि० के सेवा केन्द्रों के लिए तीन पैर पृथ्वी देने वाली माताओं का एक ग्रुप दादी प्रकाशमणी जी तथा अन्य ब्र० कु० बहनों के साथ ओमशान्ति भवन के समक्ष खड़ा दिखाई दे रहा है।

माऊंट आबू :– १०-१४ फ़रवरी तक राजयोग रीट्रीट आयोजित की गई। लगभग ६० देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। चित्र राजयोग मेडीटेशन हाल में वे विचार विमर्श करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

माऊंट आबू—चित्र में ब्र० कु० भाइयों का एक ग्रुप, जिन्होंने विभिन्न नगरों में ब्र० कु० ई० वि० वि० के सेवाकेन्द्रों के लिए तीन पैर पृथ्वी दी, दादी प्रकाशमणी जी तथा अन्य ब्र० कु० बहनों के साथ दिखाई दे रहा है।

रुड़की – विद्यालय के प्रांगण में आयोजित 'नई शिक्षा नीति प्रदर्शनी' में यहां के अधिशासी अधिकारी भ्राता जे० पी० शर्मा जी अन्य कर्मचारियों के साथ चित्रों की व्याख्या बड़े ध्यानपर्वक सन रहे हैं।

जयपुर (संग्रहालय) – 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का उद्घाटन भ्राता आर० डी० चाहेती जी मोमबत्ती जला कर कर रहे हैं। ब्र० कु० सुषमा बहन तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में खड़े हैं।

लखनऊ – आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् मैनेजर, ब्र० कु० सती दादी तथा अन्य के साथ ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं।

डेराबस्सी – सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम में उपस्थित डाक्टरों का एक समूह तथा अन्य परमात्मा-याद में खड़े हैं।

इलकल (हुबली) – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत कूडलसंगम में आयोजित एक विशाल 'आध्यात्मिक मेले' में उद्घाटन समारोह में उपस्थित भ्राता एम० बी० होक्करणी जी, ब्र० कु० सुनंदा, शोभा, यशोदा बहनें तथा अन्य प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं।

भुज-कच्छ – गुजरात राज्य के रेन्ज वन अधिकारी सेवाकेन्द्र पर पधारे। वे ब्र० कु० रक्षा बहन, हंसा बहन तथा अन्य भाई बहनों के साथ खड़े हैं।

सहारनपुर – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अन्तर्गत बाजोरिया इन्टर कालेज में आयोजित एक कार्यक्रम में (दाएं से बाएं) ब्र० कु० भगवती बहन तथा 'वर्ल्ड रिन्यूवल' के प्रबन्धक-सम्पादक ब्र० कु० लक्ष्मण जी विराजमान हैं। ब्र० कु० विद्याप्रकाश 'नई शिक्षा नीति' पर प्रकाश डाल रहे हैं।

नडियाड – शिवजयन्ति के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में भ्राता गिरीश भाई व्यास, संयुक्त खेड़ा जिला न्यायाधीश अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। मंच पर (बाएं से दाएं) महिला आर्टस महाविद्यालय के आचार्य डा० चम्पक भाई मोदी जी, ब्र० कु० पूर्णिमा बहन तथा अन्य विराजमान हैं।

कलकत्ता – नेपाल की राजमाता महारानी कमला देवी राना जी के आध्यात्मिक संग्रहालय में पधारने पर ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता जी उनका स्वागत कर रही हैं।

खानपुर (दिल्ली) – शिवरात्रि के पावन पर्व पर शिवध्वजारोहण से पूर्व उपस्थित भाई-बहनें शिव स्मृति में मग्न दिखाई दे रहे हैं।

दिल्ली (दिलशाद-गार्डन) – शिवरात्रि के पर्व पर शिव का झन्डा लहराने के पश्चात् ब्र० कु० इन्द्रा, ब्र० कु० अमृत बहन तथा अन्य शिव-स्मृति में मग्न हैं।

भावनगर – 'स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र' के प्रशिक्षण केन्द्र में विभिन्न स्थानों से पधारे प्रबन्धकगण के एक ग्रुप के सम्मुख ब्र० कु० चक्रधारी बहन 'तनाव रहित व्यवस्था' विषय पर भाषण कर रही हैं।

मऊनाथ भंजन में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु निकाली गई शान्ति-यात्रा का एक दृश्य।

बम्बई (गामदेवी) सेवाकेन्द्र पर पधारे महाराष्ट्र के सहायक पुलिस आयुक्त को ब्रह्माकुमारी कुसुम बहन आध्यात्मिक चित्रों पर व्याख्या दे रही हैं।

मुज़फ़्फ़र नगर–शिवजयन्ति के अवसर पर आयोजित समारोह में मंच पर भ्राता कृष्ण चन्द्र जी, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटरी क्लब; ब्र० कु० सुधा, स्थानीय बुलेटिन के सम्पादक भ्राता उत्तमचन्द जी तथा ब्र० कु० सन्तोष बहन।

हाथीगांव (दीसपर)–गीतापाठशाला का उद्घाटन करते हुए भ्राता गोपाल कृष्णदास जी।

फसीवाबाद–आबू रोड से पधारे स्वामी गोविन्दानन्द जी महाराज को सौगात देती हुई बी० के० मन्जू बहिन।

"मन को मारो नहीं, सुधारो"

जिस प्रकार आत्मा जीवन चक्र का आधार है उसीप्रकार आत्मा की यह सूक्ष्म शक्ति मन या संकल्प कर्म का आधार है। कर्म प्रधान मनुष्य का जीवन अपने श्रेष्ठ कर्म द्वारा स्वयं सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम का अनुभव करने के साथ-साथ अन्य को भी कराने के निमित्त बन जाता है और अपने भ्रष्ट कर्म या विकर्म द्वारा स्वयं को दुखी करने के साथ-साथ अन्य को भी दुखी अशान्त बनाता है। इसलिये यह गायन है कि आत्मा ही अपना मित्र या अपना शत्रु है। व्यक्ति मन में जो चिन्तन या संकल्प करता है उसी को वाणी के द्वारा प्रकट करता है।तत्पश्चात तद्अनुसार वह व्यवहार करता है। अतएव यदि आप अपने जीवन **में** महानता का अनुभव करना चाहते हो तो श्रेष्ठ कर्म करने के लिए सर्व प्रथम अपने मन के संकल्प को श्रेष्ठ आधार दो। उसे कल्याणकारी **बनाओ** जिससे **आपकी कर्मधारा स्वतः ही पवित्र, कल्याणकारी एवं सुखदायी बन जाएगी। आपका जीवन देवतुल्य पूज्य बनने के साथ-साथ यह समाज भी प्रेममय स्वर्ग बन जाएगा।**

सागर की लहरों की तरह मन में उठने वाले **संकल्पो**से हमारे कर्म प्रभावित होते हैं। क्योंकि मनुष्य का कोई भी कार्य बिना संकल्प के नहीं होता है। कार्य मन्दाकिनी का मन ही मूल **स्रोत** हिमालय है। मन **जो** संकल्प करता है आत्मा उसे कार्य रूप में परिणित कर देती है। इसलिए आवश्यक है कि मन का संकल्प शिव हो, **रौद्र** नहीं, रचनात्मक हो-विनाशकारी नहीं, कल्याणकारी हो-संहारक या अमंगलकारी नहीं। क्योंकि व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामूहिक जीवन धारा में अथवा विश्व के उत्थान-पतन के हर कार्य के पीछे मनुष्य की संकल्प शक्ति ही कार्य करती है जिसका प्रभाव हम नित्य प्रति देखते हैं एवं अनुभव करते हैं। इसलिए हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने मन को एकाग्र **करने** अथवा "शिव-संकल्प" करने के अनेक प्रयास एवं साधनायें की हैं। भारत के वैदिक शास्त्रों में तथा विश्व के अन्य प्राचीन दर्शनों में मन **की** महान् **शक्ति** के प्रयोग के बारे में अनेक उदाहरण एवं साधना पद्धति भी देखने एवं सुनने को मिलती है।

मन स्वयं चेतन आत्मा के संकल्प अथवा इच्छा या कामना का नाम है। मन आत्मा से कोई अलग शक्ति नहीं परन्तु उसकी ही अभिन्न शक्ति है। इसलिए मन की एकाग्रता या शुद्ध संकल्प से स्वयं आत्मा की एनर्जी (Energy) बढ़ती है एवं आत्मा में शुद्ध कर्म करने की शक्ति उत्पन्न होती है।

यह माना हुआ सिद्धान्त है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की शक्ति विलक्षण तथा व्यापक होती है। जो वस्तु जितनी सूक्ष्म होती है, उसकी शक्ति उतनी ही अधिक एवं गहराई तक पहुंचने वाली होती है। होमियोपैथिक औषधियों के चुनाव में भी यही सिद्धान्त काम करता है। मन हमारी चेतना की सूक्ष्म शक्ति है। दुनिया की सर्व सूक्ष्म शक्तियों से भी यह अति सूक्ष्म एवं शक्तिशाली है जो कि भौतिक शक्तियों को अपनी साधना एवं संकल्प के आधार पर कार्य में **लगाती** जिसके विकृत होने से मनुष्य को परमाणु बम से ज़्यादा नुकसान उठाना पड़ रहा है। क्योंकि विकृत संकल्प आत्मा को विकर्म करने के लिए प्रेरित करता है। जिससे मनुष्य **इस** जन्म में दुखी,अशान्त होने के साथ-साथ दूसरे जन्म में भी दुखी बनता है। परमाणु शक्ति के विनाश से तो मनुष्य का एक ही जन्म बिगड़ सकता है या शरीर विकृत हो सकता है परन्तु मन से अथवा संकल्प से चेतन आत्मा के कर्म एवं संस्कार बनते हैं जो उसके पुनर्जन्म को निर्धारित करते हैं। यही तो है आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्ति में अन्तर। भौतिक शक्ति के परिवर्तन से उसका प्रभाव कम या ज़्यादा होता है लेकिन आध्यात्मिक शक्ति का कर्म में या संस्कार में परिवर्तन होने से मनुष्य का वर्तमान जीवन तो प्रभावित होता ही है साथ-साथ भविष्य को भी प्रभावित करता है। मन की शक्ति न केवल शक्तिशाली है परन्तु सर्व से गतिशील भी है। आत्मा की संकल्प शक्ति प्रकाश से भी तीव्र गति से चलती है। मन ने संकल्प की तेज शक्ति से प्रकाश की गति को माप तो लिया है परन्तु मन की गति को आज तक कोई नहीं माप सका है। अभी यहां है तो अभी-अभी करोड़ों मील दूर। जब मन को एक ठोस आधार एवं लक्ष्य मिल जाता है तो उसके संकल्प में स्थिरता आ जाती है एवं मन उस आधार पर एकाग्र हो जाता है। लेकिन जब तक उसे कोई लक्ष्य या यथार्थ दिशा नहीं मिलती तो मन के संकल्प दिशा विहीन होकर भटकते रहते हैं। अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिए मन वस्तु, व्यक्ति, सम्बन्ध, सम्पर्क, धन, मान, कभी भौतिक,कभी भक्ति आदि में भटकता रहता है जिससे उसकी गति तीव्र होकर शक्तिहीन हो जाती है। परिणामस्वरूप आत्मा शक्तिहीन होने के साथ-साथ अनेक प्रकार के विकर्म करके दुखी, अशान्त एवं निराश हो जाती है।

शारीरिक परिवर्तन के साथ **मन की शक्ति** कभी वृद्ध नहीं होती। मन सदा यवा रहता है। डायनमो की तरह मन से इच्छा

अनुसार एवं आवश्यकता अनुसार जितनी शक्ति पैदा करना चाहें, की जा सकती है। परन्तु उसके लिए चाहिए शुद्ध, श्रेष्ठ, कल्याणकारी, दृढ़ संकल्प। तपस्वी, ऋषि-मुनि, साधक अपने शुद्ध संकल्प द्वारा अन्य आत्माओं को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ जग कल्याण अर्थ आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति, अपने इस मन के शक्ति द्वारा ही किया करते थे। परन्तु अशुद्ध मन की शक्ति यह काम नहीं कर सकती है।

अब हमें देखना है कि मन की शक्ति को कैसे कार्य में लगाना चाहिए? उसे कौन-सा आधार देना चाहिए? मन जिधर जाएगा उधर उसकी शक्ति खर्च होगी, चाहे उससे हम निर्माण करें या विनाश! यह देखा गया है कि मन सदा प्राप्ति की ओर आकर्षित होता है। उसके प्राप्ति के साधन वस्तु या पदार्थ, व्यक्ति या सम्बन्ध, वैभव या सुन्दरता, कोई भी हो सकता है। यह सब क्षणिक एवं परिवर्तनशील होने के कारण मन को अस्थाई आधार नहीं दे सकते हैं। समय व परिस्थिति में आये परिवर्तन से इन सब साधनों में परिवर्तन हो जाता है। फलस्वरूप मन संकल्प के रूप में कभी वस्तु से व्यक्ति की तरफ, कभी व्यक्तियों से वैभव की तरफ, तो कभी सम्बंध संपर्क से प्रकृति के पदार्थ द्वारा बने हुए क्षण-भंगुर सुन्दरता की तरफ भटकता रहता है जिससे मन की शक्ति क्षीण एवं विक्षिप्त हो जाती है। अपना लक्ष्य संपूर्ण रूप से प्राप्त न होने के कारण मन में हीन या क्षीण भावना जागृत होती है। फिर दुखी, अशान्त मन बेकाबू होकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आत्मा को बुरे कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। अतः मनुष्य सारा जीवन दुखी, अशान्त एवं तनावग्रस्त रहता है।

इसलिए मन को टिकाने के लिए एक दृढ़ आधार, बांधने के लिए एक मजबूत रस्सी एवं पकड़ने के लिए प्रलोभन की आवश्यकता है। ऐसा आधार जिसका कोई आधार न हो, स्वयं स्थिर-निश्चल हो, अविनाशी एवं मंगलमय हो, जिसमें मन अपनी सर्व प्राप्तियों की अनुभूति कर सके, जो सांसारिक प्राप्तियों से भी श्रेष्ठ एवं महान् हो, तभी मन काबू में आ सकता है। मन को मारना नहीं है। मारने से वह मरेगा नहीं परन्तु और तीव्र एवं क्रुद्ध हो जायेगा। उसे जीवित रहने दो परन्तु उसे सुधारो। सही मार्ग एवं श्रेष्ठ लक्ष्य प्रदान कर कार्य करने की प्रेरणा दो। **उपाय कठिन हो सकता है परन्तु अभ्यास से सब सरल बन जाता है।** इसके लिए साधना एवं तपस्या की आवश्यकता है।

सबसे पहले मन को बाहर भटकने मत दो। जितना वह बाहर आयेगा, उतनी ही उसकी शक्ति क्षीण होती जायेगी। इसलिए उसे अपने आन्तरिक जीवन की तरफ ले जाओ। अन्तर्मुखी बनाओ अर्थात् अपने आत्म-चिन्तन में लगाओ। इससे अपने कल्याण के लिए शक्ति संचित होगी। फिर उसे अचल, अडोल, अविनाशी, सत-चित-आनन्दमय उस निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव का आधार एवं उनके द्वारा बताये गये राजयोग के श्रेष्ठ राजपथ पर चलने का लक्ष्य प्रदान करो। जो सदा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् हैं, सर्वगुणों की खान, सर्वशक्तियों के स्रोत एवं ज्ञान के सागर हैं, जिससे ये संसार सृष्ट है एवं जिसमें ये संसार समाथा है—मन को उस एक का लक्ष्य अथवा आधार देने से स्वतः ही मन एकाग्र हो जायेगा और मन उस एक से ही संसार की सर्व वस्तुओं, वैभवों, सम्बंधों की अनुभूति कर सकता है। उसके दिव्य ज्ञान का खजाना, पवित्र प्रकाश की सुन्दरता, रूहानी अविनाशी प्रेम-भरा सर्व सम्बंध ही सर्व प्राप्ति का स्रोत बन जायेगा। क्योंकि वह अनश्वर ईश्वर है, सदा कल्याणकारी एवं मंगलमय है। ऐसे श्रेष्ठ आधार "शिव" को ही मन दे दिया जाये तो निश्चित रूप से उसके संकल्प सदा शिव संकल्प बन ही जायेंगे। मन उसके गुण, शक्ति एवं ज्ञान के वृहत सागर की लहरों में लहराकर उसमें ही समा जायेगा अर्थात् गुण, शक्ति एवं ज्ञान स्वरूप स्वतः एवं सहज बन जायेगा। साथ-साथ अपने शुद्ध संकल्प, कल्याणकारी भावना एवं मंगलकारी कामनाओं से अन्य आत्माओं को भी सुखी बनायेगा। ऐसा श्रेष्ठ आधार प्रदान कर मन की शक्ति को स्व कल्याण एवं विश्व कल्याण के कार्य में लगाकर इस मनुष्य जीवन को सफल एवं सार्थक बनाइये।

कानपुर (नयागंज) – 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का अवलोकन करने के पश्चात् शाहाबाद के एम० डी० एम० भ्राता सत्यजीत ठाकुर जी अपने विचार लिख रहे हैं। उनके बाईं ओर ब्र० कु० समिता बहन विराजमान हैं।

तिनसुकिया – 'पिता श्री' जी के १९ वें 'स्मृति-दिवस' पर आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' कार्यक्रम में मस्तान साहब अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं।

जड़ और चेतन के शुद्धिकरण की प्रक्रिया

ब्र.कु. व्ही.जे. वराडपांडे, दमोह

आत्मा और शरीर भिन्न सत्ताएं हैं। जिस प्रकार शरीर विषाक्त पदार्थों से भर जाने के कारण रोगी हो जाता है वैसे आत्मा भी विकारी संकल्पों से भर जाने के कारण रोगी हो जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा शास्त्र के अनुसार शरीर के विषाक्त हो जाने पर स्वयं प्रकृति विषाक्त पदार्थों को अनेक रूपों से बाहर निकाल फैंकने की चेष्टा करती है। प्रकृति की इसी चेष्टा अथवा क्रिया को बीमारी की संज्ञा दी गई है। युगों-युगों से शरीर की बीमारी ने मनुष्य का पिंड नहीं छोड़ा जबकि स्वयं प्रकृति शरीर की सफाई समय प्रति समय आवश्यकता अनुसार करती चली आ रही है। शरीर में विषाक्त पदार्थों का संचय होते रहना और प्रकृति द्वारा उन विषैले पदार्थों को बाहर फैंकते रहना,यह क्रम चलता ही रहता है। शरीर की सफाई का कार्य तो प्रकृति करती है किन्तु शरीर को गंदा या विषाक्त बनाने के लिये जिम्मेदार कौन? जिम्मेदार है चैतन्य आत्मा। गोया आत्मा की गलतियों को प्रकृति सुधारती है और इस सुधार की प्रक्रिया में आत्मा कष्ट और पीड़ा का अनुभव करती है। शरीर-विज्ञान कहता है इसे बीमारी हो गई। रोगी कहने लगता मैं अस्वस्थ हूं। यथार्थ में आत्मा ही अस्वस्थ है जिस कारण शरीर भी अस्वस्थ हो जाता है क्योंकि आत्मा और शरीर का एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किन्तु आत्मा की अस्वस्थता की ओर कोई ध्यान नहीं देता। ध्यान दिया जाता है शरीर की अस्वस्थता की तरफ। यह बात भूल जाती है कि आत्मा की अस्वस्थता ही शरीर की अस्वस्थता का मूल कारण है। प्राकृतिक चिकित्सा के मतानुसार सभी रोगों का मूल कारण है शरीर में संचित विकार। किन्तु थोड़ा गहराई में जाने पर प्रश्न उठता है कि शरीर में विकारों का संचय क्यों होता है? इसके लिये जिम्मेदार कौन है? शरीर को चलाने वाली जो चैतन्य शक्ति आत्मा है वही विकारी हो तो शरीर में विकारों का संचय होना स्वाभाविक है। अतः निष्कर्ष यही हुआ कि शरीर को रोगी बनाने के लिये जिम्मेदार रोगी आत्मा है। इसलिये आत्मा की सफाई आवश्यक है। आत्मा की सफाई हो जावे तो फिर प्रकृति को बार-बार शरीर की सफाई करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। दूसरे शब्दों में शरीर रोगों से मुक्त होगा। क्रिया करने वाली आत्मा, प्रतिक्रिया करने वाली प्रकृति है। प्रकृति स्वयं क्रियाशील नहीं। प्रकृति की प्रतिक्रिया प्रकृति के प्रति होती है। प्रकृति चेतन आत्मा का शुद्धिकरण नहीं कर सकती। चेतन आत्मा का शुद्धिकरण तो कोई चैतन्य आत्मा ही कर सकती है, किन्तु वह चैतन्य आत्मा स्वयं विकार रहित हो। ऐसी विकार रहित आत्मा एक है जो सर्व आत्माओं में परम है, जिसे "परम आत्मा" कहा जाता है। जब आत्माओं में विकार चरम सीमा में पहुंच जाते हैं,वह समय अति धर्म ग्लानि का होता है और उस समय वही निर्विकार परम चैतन्य शक्ति, विकारी चेतन आत्माओं का शुद्धिकरण करती है। साथ-ही-साथ प्रकृति भी जड़ जगत के शुद्धिकरण में सहयोग देती है। इस प्रकार जड़ और चेतन दोनों सतोगुणी अवस्था को प्राप्त होकर सतयुगी सृष्टि का प्रारम्भ होता है जिसे स्वर्ग कहते हैं। जहां रोग, शोक, चिंता, जरा,मृत्यु नहीं होते। □

शेष पृष्ठ १५

जैसे सपेरा बीन (बीणा) बजाकर साँप को मस्ती में लाकर, उसके दाँत निकाल कर उसे अहिंसक बना देता है, वैसे ही परमात्मा (गीता का भगवान्) जादूगर भी ज्ञान की मुरली बजाकर विकारी संस्कारों वाली मनुष्यात्मा के अशुद्ध संस्कार रूपी विष निकाल देता है। इसलिए, जब तक ईश्वरीय पाठशाला में, कोई परमात्मा ही की ज्ञान-मुरली न सुने, परमात्मा ही के अर्पण होकर उनका संग न करे अथवा परमात्मा द्वारा परमात्मा से योग-युक्त न हो, तब तक किसी के संस्कार आसुरी से दैवी हो ही नहीं सकते।

एटा में 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन जिलाधिकारी श्री जैकब थॉमस जी टेप कर रहे हैं।

सबै भूमि गोपाल की, जै कन्हैया लाल की

ब्र०कु० ओमप्रकाश, बांदा

यह कहावत तो जग प्रसिद्ध है, पर लगता है जैसे लोग इसके सही अर्थों को नहीं जानते। सच भी है अल्पज्ञ मनुष्य अपनी बुद्धि से इस रहस्य को समझ भी नहीं सकता, उसे तो इसका वास्तविक रहस्य खुलता है—परमपिता परमात्मा शिव के ब्रहमा तन में अवतरण के बाद ही। गोपाल का, अर्थ है—गो-माने गऊ अर्थात सिकीलधे: यानी सीधे-साधे, अत्यन्त सरल एवं निर्मल हृदय वाले – बच्चे। पाल माने पालना देने वाले अर्थात् ज्ञान की लोरी सुना कर लौकिक माँ-बाप से भी अच्छी तरह पालना देने वाले-परम प्यारे शिव बाबा-जो ब्रहमातन के माध्यम से सिकीलधे बच्चों को ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर करते हैं। तो वही 'गोपाल' कहते हैं, "मीठे बच्चो, सभी भूमि तो मेरी है—और जब तुम बच्चे मेरा पूरा-पूरा कहना मानते हो, तो तुमको इनाम स्वरूप मैं बना देता हूँ-कन्हैया लाल अर्थात् बाप के कन्धों पर बैठने वाले अति लाडले अर्थात् देवता श्रीकृष्ण अर्थात् सतयुगी महाराज कुमार, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरूषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म-विश्व महारानी श्री लक्ष्मी और विश्व महाराजन श्री नारायण।" अर्थात् सम्पूर्ण धरती के स्वामी। और फिर मेरे समान ही तुम्हारी भी जै बोली जाती है और लोग फिर कहते हैं, "जै कन्हैया लाल की" अर्थात् शिव बाबा के सम्पूर्ण बनने वाले बच्चों की जै हो।

इस सत्य बात को मेरे साथ घटी इस घटना के माध्यम से और भी स्पष्ट तरीके से समझा जासकता है। एक बार की बात है। उ० प्र० पुलिस के एक सब-इंसपेक्टर (दरोगा) महोदय मुझसे मिलने के लिए पधारे। उनसे ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा हुई, वे अति सन्तुष्ट व अति प्रसन्न हुये और बोले, "मैं भी आप लोगों की तरह जीवन जिऊंगा-मैं नौकरी-टोकरी की परवाह नहीं करता। मेरे पास एटा में 25 एकड़ भूमि है— मैं नौकरी को लात मार दूँगा- और ठाठ से जाकर एटा में रहूँगा और लोगों की सेवा करूंगा।"

मुझे लगा-लगता है इन्होंने ईश्वरीय ज्ञान को कुछ गलत समझ लिया है— कारण शिव बाबा का ज्ञान मिलने पर भी मैंने तो कोई भी जमीन-जायदाद छोड़ी नहीं। छोड़ना तो उनके प्रति मोह, लोभ, अहंकार आदि की भावना को ही है। मुझे लगा जैसे इन भाई जी को अपनी 25 एकड़ भूमि के मालिक होने का तीव्र अहंकार है। आखिर यह ना समझी क्यों न हो-एटा में भूमि 25,000 रू. प्रति एकड़ बिकती भी तो है— इस प्रकार उनकी भूमि का मूल्य भी तो 6,25,000 रूपये हो जाता है।

संयोग से उस समय जब वे आये थे मैं करीब 700 रू. मूल्य की लन्दन में रीडर्स डाइजेस्ट कम्पनी द्वारा छापी गई "वर्ल्ड एटलस" पुस्तक पढ़ रहा था। उनकी उपरोक्त वर्णित बातें सुनकर मैनें उन्हें प्रारम्भ से वह पुस्तक दिखानी शुरू की। सर्वप्रथम उसमें एक चित्र दिया है जिसमें सम्पूर्ण आकाश को दिखाया गया है—चाँद सितारों की धरती को। ढेर सारी छोटी-छोटी बिन्दियां वहाँ थीं। उन्हीं में एक छोटा तीर बना था, लिखा था कि यहाँ कहीं है "सौर मण्डल"। दूसरा बड़ा चित्र था "सौर मण्डल" का जैसा एक आबू में प्रजापिता ब्र०कु०ई०वि०वि० के मेडीटेशन हाल में लगा है तथा दूसरा "ओम शान्ति भवन" के बरामदे में लगा है। इसमें सूर्य तथा उसके नौ ग्रह दिखाये गये हैं, पृथ्वी से प्रत्येक ग्रह की कितनी अरब-खरब कि.मी. दूरी है, कौन ग्रह पृथ्वी के मुकाबले कितना छोटा व बड़ा है—वहाँ का क्या वातावरण है—कितना उनका क्षेत्रफल है आदि आदि बातें उस पुस्तक में वर्णित हैं।

तीसरा बड़ा चित्र है केवल पृथ्वी का जिसके वर्णन में लिखा है इसकी पृष्ठ भूमि का क्षेत्रफल कुल 51,000,4000 वर्ग किलोमीटर है। फिर अगले चित्र में पृथ्वी के भूमि के हिस्से तथा पाँचों महाद्वीपों का नक्शा है—जिसमें दिया है कि उपरोक्त सम्पूर्ण पृथ्वी के क्षेत्रफल में से 71.29 % समुद्र है

और बाकी जमीन है।

अन्त में मैंने उन्हें दिखाया वर्तमान बंटे हुए भारत देश का नक्शा। मैंने उन्हें बताया-वर्तमान भारत की सकल भूमि है मात्र 32,87,242 वर्ग किलो मीटर। मैंने उनसे सवाल किया,"भ्राता जी,क्या बता सकते हैं इस नक्शे में आपकी वो 25 एकड़ जमीन कहाँ पर है?" उन्हें अपनी लघुता का मन ही मन मान हुआ तो वे एकदम चौंकते हुये बोले,"वाह भ्राता जी मेरी जमीन का इसमें क्या पता चलेगा-इसमें तो सम्पूर्ण एटा जिले के लिये ही एक जरा सी बिन्दी रखी हुयी है और छोटा सा लिखा है एटा।" मैं यही चाहता था कि वे अनुभव कर लें और जरा-सी भूमि के टुकड़े की प्राप्ति का उन्हें इतना नशा था, अहंकार था-वह नष्ट हो जाये।

उनकी बात से मुझे अपना उद्देय पूरा होता दिखा-मैंने तपाक से पूछा," जानते हैं यह सम्पूर्ण पृथ्वी-सम्पूर्ण ग्रह-सम्पूर्ण आकाश-सम्पूर्ण ब्रह्मांड किसका है?" उन्होंने कुछ आँखे चौड़ी करते हुये आश्चर्य चकित हो पूछा "किसका?" मैने कहा," हमारे बाप का।" चूंकि वे ईश्वरीय ज्ञान पहले सुन ही चुके थे,अतः इस बात से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि हम केवल 25 एकड़ के ही नहीं वरन् शिव बाबा के पुत्र बनने से हम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के मालिक बनते हैं।

मैनें आगे समझाते हुये कहा,"जानते हैं, आज से 5000 वर्ष पूर्व 5 महाद्वीपों में बंटी हुई जो यह धरती समुंद्र में तैरती सी दिख रही है-यह सब एक स्थान पर थी,तब एक ही देश था-उसे ही "भारत" कहा जाता था, उसी में स्वर्ग था। स्वर्ण निर्मित महल व मकान में-सम्पूर्ण सुख-शान्ति-पवित्रता मनुष्यों तथा धरती में थी। उस समय के प्रारम्भिक लोग देवी-देवता कहलाते थे। फिर कालान्तर में भीड़ बढ़ती गई।जैसे-जैसे समय बीता-सतयुग, त्रेता के बाद द्वापर व कलियुग में मनुष्य के गुणों का ह्रास हुआ, धरती भी बंटती गई। फिर मनुष्य का मन बँटा तो धरती भी बंटी। धरती बटी अर्थात भारत बंटा और बढ़ते-बढ़ते इतना बंटा की 213 देश बन गये। फिर उनमें बंटे प्रदेश-जिले-नगर-कस्बे-मुहल्ले और घर। और बंटे-घरों में कमरे और कमरों में चारपाइयां। और चरपाई में पड़ा मनुष्य भी बंटा हुआ है मन की दुविधा में। क्या गलत है और क्या सही है? वह निश्चय ही नही कर पाता। तभी आते हैं हम सब मनुष्य आत्माओं के परम प्यारे "शिव बाबा" और कहते हैं, "बच्चो! तुम सब देह नहीं-आत्मायें हो-मुझ परमात्मा की सन्तान।" तो जो बच्चे उनके कहने पर चलते हैं—वे बनते हैं शिव बाबा के बालक सो मालिक अर्थात् सम्पूर्ण धरती के मालिक। और फिर उनका बाप के समान ही गायन होता है— "सबै भूमि गोपाल की, जै कन्हैया लाल की।"

बेलगाम — 'युवा-सप्ताह' के अवसर पर आयोजित एक समारोह में (बाएं से दाएं) भ्राता पंगम जी, जिला खेल अधिकारी, ब्र० कु० महादेव, स्वामी अम्बिकानंद जी तथा बहन सुनंदा पटेल जी (उप-प्रदान, जि० प०)कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर कर रहे हैं।

"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार"

सुखमय संसार बनाने की मूलभूत इकाई परिवार पर आधारित है। परिवार को सखी बनाना उनके सदस्यों पर निर्भर करता है। अगर एक भी सदस्य। के अन्य सदस्यों से विचार, कर्म भिन्न हैं तो परिवार की सुख-शान्ति छिन्न-भिन्न हो जाती है। भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न पारिवारिक सदस्य अपने मन के सुख को खो बैठता है।

अतः व्यक्ति को चाहिए भौतिक सुख के साथ-साथ मन की सुख-शान्ति। इसके लिए उसे आध्यात्म-शक्ति चाहिए। क्योंकि आध्यात्मवाद ही भौतिक सुख को सही तरीके से अपनाना और अन्य वैयक्तिक विचारों का अपने जीवन में कैसे समन्वय करें, यह सिखलाता है। आइये! हम देखें इस प्रस्तुति में–"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार"

इसके पात्र हैं –

1.	12 वीं कक्षा की छात्रा	– मीना, आयु 16 वर्ष
2.	विनय मलहोत्रा	– मीना के पापा, कपड़े के बहुत बड़े व्यापारी
3.	सुशीला देवी	– मीना की मां व विनय मल्होत्रा की धर्मपत्नी
4.	रामू	– नौकर
5.	ब्रह्माकुमारी	–

(प्रथम-दृश्य)

मीना–(स्कूल से आती है) रामू काका, ओ रामू काका, मम्मी कहां है?

रामू–बिटिया! मेम साहब तो अपनी सहेली के घर गई हैं। उन्होंने कहा है कि आज रात को क्लब में प्रोग्राम है, मैं देर से आऊंगी। इसलिए बिटिया से कहना खाने पर मेरी इन्तजार नहीं करे।

मीना–ओहो! हमेशा की तरह आज भी मम्मी घर पर नहीं है,जब देखो कभी सहेली के घर, कभी मार्केट में, न जाने कहां-कहां... अच्छा पापा कहां हैं?

रामू–जी... जी... साहब तो अपने कार्य के सिलसिले में दिल्ली गये हुए हैं। कह गये हैं रात को लौट आयेंगे।

मीना–हां... हां, पापा को अपने कार्य से फुर्सत नहीं और मम्मी को घूमने-फिरने से। और एक मैं हूं जो फालतू की तरह हूं जिसको पूछने वाला भी कोई नहीं है।

गीत गुनगुनाती है–"**मैंने मां को देखा है, मां का प्यार नहीं देखा।**" उदास हो जाती है।

रामू–बिटिया! तू उदास क्यों होती है। तू तो बहुत ही भाग्यशालिनी है तुम्हें किस चीज की कमी है–ये कोठी, मोटर-कार, टी.वी., फ्रिज, वी.सी.आर. सब-कुछ तो है, तुम्हें और क्या चाहिए। चलो उठो, खाना खा लो।

मीना–नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए। ये बेजान चीजें मेरा क्या मन बहलायेंगी। मुझे तो केवल मां-बाप का प्यार भरा हाथ चाहिए। मुझसे कोई सब-कुछ ले ले परन्तु... परन्तु मुझे सिर्फ प्यार चाहिए, स्नेह चाहिए, स्नेह!

(उसी समय कॉलबेल बज उठता है)

रामू दरवाजा खोलता है । विनय कुमार का प्रवेश।

विनय कुमार–(रामू से) रामू! मीना कहां हैं और मेम साहब कहां हैं?

रामू–जी, मेम साहब क्लब गयी हुई हैं और बिटिया अंदर उदास बैठी है, रो रही है।

विनय कुमार–(चिंतित स्वर में) क्यों, क्या हुआ उसे? (आवाज लगाते हैं)। मीना, मीना ओ मेरी बिटिया! क्या हुआ तुझे? क्या बात है?

(मीना मुंह फेरकर बैठ जाती है)

विनय कुमार–मेरी बेटी! आज किसी ने कुछ कहा है क्या? किसी में यह हिम्मत नहीं है जो मेरी बेटी को कुछ कह दे। बताओ न बेटी, क्या बात है?

मीना–(रोष प्रकट करते हुए) क्या है पापा! मेरा तो यहां दम घुट रहा है। मैं तो अकेले-अकेले ऊब गयी हूं। जब देखो तो आपको अपने कार्यों से फुर्सत नहीं और मम्मी को क्लब से। मेरे लिए तो किसी का ध्यान ही नहीं रहता। आज हमारे स्कूल में "पेरैन्ट्स डे" था। सबके माता-पिता आये थे। मेरी सभी सहेलियां खुशी से चहक रही थीं और मैं... जैसे कि मेरा तो कोई है ही नहीं। जो आज के कार्यक्रम में मेरी खुशी में मेरे माता-पिता शामिल होते।

(उसी समय कॉलबेल बज उठता है)। रामू दरवाजा खोलता है। नशे में लड़खड़ाती हुई सुशीला देवी का प्रवेश।

सुशीला देवी–(नशीली आवाज में) रा...मू... मेरा बि...स...तर... जल्दी से लगा दे।

विनय कुमार विनय सुशीला को इस स्थिति में देखकर क्रोध में आ जाता है। (क्रोध से सुशीला की बांह पकड़कर झंझकोरते हुए) सुशीला! तुमने ये क्या हालत बना रखी है? जब भी घर में आऊं, तुम घर में ही नहीं मिलती हो। आफिस से थककर आता हूं लेकिन ऐसा नहीं किसी को अपने दिल का

हाल सुनाकर मन को हल्का करूं।और तो और अपनी एक ही तो बच्ची है मीना! उसका कभी तुमने ध्यान रखा है, कभी उसे प्यार किया है? बस, केवल एक ही बात तुम्हें दिखती है क्लब और शराब। मैं तो तंग आ गया हूं ऐसे जीवन से।

सुशीला देवी—हां... हां! जैसे सारा दोष तो मेरा ही है। क्या मैं इंसान नहीं हूं। आप तो सारा समय बिजनेस में लगे रहते हैं.घर का सारा कार्य नौकर-चाकर संभालते हैं। मीना स्कूल चली जाती है। सारा समय घर में पड़ी-पड़ी क्या करूं? अगर मैं कहीं दो घड़ी अपने को बहलाने के लिए क्लब चली जाती हूं तो आपको क्या एतराज़ है?

विनय कुमार—(गुस्से से चीखते हुए) सुशीला! बंद करो ये बकवास!

मीना—(मम्मी से भरे गले से) मम्मी! जबसे मैंने होश संभाला है तबसे सदा ही एक तरह से अपने आपको अकेले ही महसूस करती हूं। कभी पापा मिलते हैं पांच-दस मिनट के लिए और आप भी मिलती हैं तो नशे की हालत में। आखिर मैं भी क्या करूं, कहां जाऊं? हे भगवान् आप ही मुझे कोई रास्ता बताओ।

विनय कुमार—मैं तो इन बातों से बहुत ही तंग हो चुका हूं,मैं तो अब एक सैकंड भी यहां ठहर नहीं सकता। इससे तो अच्छा है अपने ही कार्यों में सिर खपाना।

(चलने का उपक्रम)

सुशीला देवी—हाय! इस छोटे से परिवार में भी इतनी अशान्ति। इतना तनाव। इस तनाव से छुटकारा पाने का तो मेरा एक ही सहारा है शराब। एक-दो पैग और पी लूं। **(बोतल की ओर बढ़ती है)**

ब्रह्माकुमारी का प्रवेश—

विनय कुमार—आईये-आईये बहन जी! आज आप बहुत ही अच्छे मौके पर पधारी हैं। बैठिये।

ब्रह्माकुमारी—(बैठते हुए) क्या बात है भाई साहब! आज आप कुछ परेशान से दिख रहे हैं।

विनय कुमार—हां, बहिन जी! आपने ठीक कहा। लोग कहते हैं छोटा परिवार और सुखी इंसान। लेकिन मेरा परिवार छोटा ही नहीं, भौतिक सम्पन्न होते हुए भी दुःखी-अशान्त है, किसी को भी सन्तुष्टि नहीं है।

सुशीला देवी—बहिन जी! देखो, क्या करें,इनको तो सारा दिन काम-धंधे से फुर्सत नहीं है.मैं तो घर की चार दीवारी में रहते हुए तंग हो गई हूं। इससे थोड़ा बाहर निकलो तो, ये नाराज होते हैं।

मीना—दीदी! देखो, पापा तो सारा दिन व्यस्त रहते हैं। मम्मी अपने मन को बहलाने के लिए क्लब में चली जाती हैं और मुझसे प्यार के दो शब्द कहने वाला भी कोई नहीं है। सब-कुछ होते भी मुझे प्यार की कमी महसूस होती है। अब आप ही बताएं मैं क्या करूं?

ब्रह्माकुमारी—देखिए! आज का मनुष्य विनाशी भौतिक साधनों से ही सच्ची सुख-शान्ति चाहता है तो कहां से मिलेगी? वैज्ञानिक भी चांद तक पहुंच गए पर चांद की सी शीतलता क्या वह मानव जीवन में दे सका है? मनुष्य अपनी खुशी के मौके पर क्लब में जुआ खेलकर, पीकर मनाता है और गम के मौके पर खुद को शराब में डुबो देता है या इससे अधिक दुःख उससे सहन नहीं होता तो वह जीवघात (आत्महत्या) कर लेता है। शराब आदि नशीले पदार्थ सुख देने या गम भुलाने के नहीं वरन् जीवन में जहर घोलते हैं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता को भी अपने जीवन में सम्मिलित करे।

सुशीला देवी—बहिन जी! आध्यात्मिकता से आपका क्या अभिप्रायः है ? क्या इन देवी-देवता की पूजा करना ही आध्यात्मिकता है?

ब्रह्माकुमारी—नहीं, आध्यात्मिकता माना आंतरिक ज्ञान अर्थात् स्व की पहचान हो तथा परमपिता का भी वास्तविक परिचय हो जिससे हम तत्वों से बनी मूर्तियों की ओर अपनी बुद्धि न लगाकर परमपिता परमात्मा के साथ लगा सकें जो ही सच्चा सुख-शान्ति देने वाला है। वही हमें श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान भी देते हैं जिसके आधार से मनुष्य अपने सांसारिक कर्मों को करते हुए,अपने कर्म को श्रेष्ठ और दिव्य बनाते हुए देव पद के लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं। श्रेष्ठ कर्मों का ही गायन है, नर ऐसी करनी करे जो नारायण कहलाये और नारी ऐसी करनी करे जो श्रीलक्ष्मी कहलाये। चरित्र के आधार से ही चित्र बनता है इसलिए पूजनीय सदैव देवी-देवताओं को ही माना जाता है।

मीना—तो क्या देवी-देवताएं हमारी ही तरह मनुष्य थे! यह सुनकर बड़ा ही विचित्र-सा लगता है।

विनय कुमार—बहिन जी, हम तो समझते हैं कि देवी-देवताओं का कोई अलग ही लोक होगा।

ब्रह्माकुमारी—आखिर इस मनुष्य-सृष्टि में देवी-देवताओं की मूर्तियों का पाया जाना इस बात को सिद्ध करता है कि देवी-देवताएं इसी मनुष्य-सृष्टि के श्रेष्ठ आचरण वाले मनुष्य थे जो दैवी गुण सम्पन्न होने के कारण देवी-देवता कहलाते थे। जिनका चरित्र संसार को बड़ा ही सुख देने वाला रहा है। वे आपस में भी बड़े प्यार से हिल-मिलकर एकता के सूत्र में बंधे रहते थे। इसलिए जब उनका संसार पर राज्य था तब बड़ी ही सुख-शान्ति थी अथवा उनका संसार सुखमय कहलाता था। अगर वे दूसरे लोक के हो तो उनकी मूर्तियां यहां कैसे पायी जातीं? परन्तु आज के मनुष्य धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट

पथभ्रष्ट हो गये हैं तो भला आज की दुनिया में दुःख-अशान्ति क्लह-क्लेष क्योंकर न होगा! हां, अगर मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन को सुखमय-शान्तिमय बनाना चाहता है तो उन्हें भी अपने कर्मों को बदलना होगा, अपने उत्तरदायित्व को समझना होगा। अगर हमारे पास खाली समय है तो क्लब, शराब, जुआ आदि में न लगाकर श्रेष्ठ रचनात्मक कार्य करने में लगायें जिससे स्वयं ही नहीं दूसरे भी लाभ उठा सकें।

मीना—सच दीदी! अगर मम्मी अपने खाली समय को श्रेष्ठ रचनात्मक कार्यों में लगायें तो उनका जीवन बहुत ही उत्तम बन जायेगा और मुझे भी मां-बाप का प्यार पाने के लिए भटकना नहीं पड़ेगा।

ब्रह्माकुमारी—तुम ठीक कहती हो मीना! अगर तुम्हारे माता-पिता इस बात से सहमत हों तो।

विनय-सुशीला—(दोनों एक साथ)—हम आपकी बात से सहमत हैं। विनय—हम दोनों ही प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम अपने कार्यभार के उत्तरदायित्व को संभालते हुए अपने व्यवहारिकता को श्रेष्ठ बनायेंगे और औरों को भी प्रेरणा देंगे।

मीना—धन्य हैं दीदी आप! आज मैंने आपके द्वारा ही अपने माता-पिता का खोया हुआ प्यार पाया।

ब्रह्माकुमारी—मीना! तुम्हें तो दोहरी खुशी होनी चाहिए क्योंकि परमपिता परमात्मा शिव ने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रहमा के तन द्वारा लौकिक प्यार की ही नहीं वरन् अलौकिक और पारलौकिक प्यार को भी पाने का सहज ही रास्ता राजयोग सिखाकर दे रहे हैं जिसके आधार से हम दैहिक प्यार से भी ऊपर उठकर श्रेष्ठ अलौकिक स्नेह की दुनिया का आगमन कर सकते हैं जहां स्नेह प्यार की कभी कमी नहीं होगी। वहां कोई भी अप्राप्त वस्तु नहीं होगी। अतः धन्यवाद तो उस परमपिता परमात्मा को दो जिन्होंने ही तुमको अपने माता-पिता का प्यार दिला दिया। क्यों भाई साहब, क्यों सुशीला बहन जी, ठीक है ना?

सुशीला देवी—हां, बहिन जी! आप ठीक कहती हैं। आज मैं भी ऐसा महसूस कर रही हूं कि आज जैसे अपने परिवार के लोगों के साथ हूं। आज से मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि अपने इस परिवार को सुखमय-शान्तिमय बनाऊंगी।

विनय कुमार—अहा! आज मुझे सचमुच पारिवारिक सुख की अनुभूति हो रही है। धन्य हैं आप और धन्य हैं परमात्मा पिता जिन्होंने आपको अच्छे समय पर भेजकर हमें सही रास्ता दिखा दिया।

सुशीला देवी—वे आपके ही परमपिता नहीं बल्कि हम सबके परमपिता हैं, बाबा हैं। हम सब उनके शुक्रगुजार हैं।

मीना—वाह मम्मी वाह! वाह दीदी वाह! आज तो मेरा मन खुशी से बार-बार यही गा उठता है। "ओ बाबा, आपने कमाल कर दिया···" **(समाप्त)** □

बी.के. मीनाक्षी, साम्भर लेक (राजस्थान)

मेहसाना—में प्र० ब्र० कु० ई० वि० वि० का नवनिर्मित भवन 'पीस-पैलेस' ऊपर में शिवबाबा का झन्डा लहरा रहा है।

दिल्ली—मालवीय नगर में आयोजित 'नौ दुर्गा चैतन्य झांकी' का उद्घाटन कार्यकारी पार्षद भाता देवेन्द्र सूद जी मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं।

खेड़ब्रह्मा—नये भवन तथा आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी तथा गुजरात राज्य के चांधकाम और समाज कल्याण मंत्री भ्राता दलित भाई परमार जी।

बैंगलोर—न्यायमूर्ति लक्ष्मेश्वरा जी आध्यात्मिक बैंक के उद्घाटन अवसर पर अपने विचार रखते हुए।

कानपुर—शिवरात्रि पर्व पर शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् ब्र० कु० दादी आत्मा इन्द्रा जी तथा अन्य शिवबाबा की याद में खड़े दिखाई दे रहे हैं।

पटना—'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का उद्घाटन भ्राता आर० सी० अरूरा, सचिव, बिहार सरकार मोमबतियां जलाकर कर रहे हैं। ब्र० कु० निर्मल पुष्पा, ब्र० कु० इन्द्रा पास में खड़ी हैं।

दिल्ली (पालम)—'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित 'शिक्षा विद् सम्मेलन' में पधारे अतिथिगण को ब्र० कु० सुदेश बहन बैज लगा रही हैं।

नौएडा में सेवाकेंद्र पर आयोजित एक स्नेह मिलन के कार्यक्रम में ब्र० कु० ब्रिज मोहन, सम्पादक, प्योरिटी पत्रिका (प्रवचन करते हुए) तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

बम्बई (मुलुंद) में स्मृति-दिवस पर आयोजित 'संगीत संध्या' में दिव्य गीत पेश करते हुए ज्योति मंगेशकर गोकर्ण एवं साथ में प्रसिद्ध गायक कलाकार भ्राता अमर कुमार और दलीप कुमार जी।

दिल्ली (शक्तिनगर) – सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र० कु० चक्रधारी बहन तथा ब्र० कु० डा० मंजू बहन यूनिवर्सिटी के जुबली हाल में आयोजित समारोह में अन्य वक्तागण के साथ मंच पर विराजमान हैं।

फिरोजपुर (सिटी) में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम में उपस्थित जन-समूह को दादी चन्द्रमणी जी, संयुक्त प्रशासिका, ई० वि० वि० सम्बोधित कर रही है।

कार्काल – राजकीय महाविद्यालय के शतमानोत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बी० बी० भास्कर, डी० आई० जी० तथा अन्य दीप प्रज्जवलित कर कर रहे हैं।

मेरठ–शिवजयन्ति के शुभ अवसर पर शिवध्वजारोहण कार्यक्रम में ब्र० कु० कमलसुन्दरी जी तथा अन्य शिवबाबा की याद में खड़े हैं।

फिल्लौर में विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक के उद्घाटन समारोह में एस० के० मल्होत्रा जी, उद्योगपति एवं प्रधान, 'फ्रैन्डस क्लब' ब्र० कु० राजकुमारी बहन तथा अन्य के साथ दिखाई दे रहे हैं।

स्वस्थ्य जीवन के लिए आहार की शुद्धि एवं कर्मेन्द्रियों का नियंत्रण आवश्यक

डा० लेले

इन्दौर 21 फरवरी । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एवं मेडिकल विंग आफ़ राजयोग एजूकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन में मुख्य अतिथि जसलोक अस्पताल,बम्बई के न्युक्लियर मेडिसिन के विभागाध्यक्ष डा० आर० डी० लेले ने "तनावमुक्त जीवन' विषय पर बोलते हुए कहा कि जीवन को तनावमुक्त बनाने से भी कहीं अधिक आवश्यक है जीवन को स्वस्थ्य एंव सुखी बनाना । जीवन को सुखी बनाने के लिए आहार का बड़ा महत्त्व है । शिथिलीकरण की क्रिया से भी स्वास्थ्य अच्छा रह सकता हैं । कर्मेन्द्रियों का नियंत्रण, सत्यता, क्षमाशीलता , दयालुता आदि गुण शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही तरफ से स्वस्थ रखते हैं । इन्दौर के डेन्टल कालेज के डीन डा० ए० के० दास जी ने कहा कि हर व्यक्ति तनावमुक्त जीवन जीना चाहता है,: जीवन में कोई भी तनाव न हो । वर्तमान समय यह कल्पना सा लगता है परन्तु नियमित योग के अभ्यास से हम तनावमुक्त जीवन यापन कर सकते हैं । पश्चिमी जर्मनी की डा० गिजला ने कहा कि स्वयं का वास्तविक परिचय होने पर हम रोग का मूल कारण समझ सकते हैं । मैं इस शरीर का संचालन करने वाली चैतन्य सत्ता आत्मा हूँ । यह समझ धारण करने से हमारा जीवन नियंत्रित हो सकता है ।

संस्था की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादीजी ने कहा कि चिकित्सकों को अपने रोगियों को रोग परीक्षण के साथ उनको हमदर्दी तथा धैर्यता का आश्वासन देने से उनका आधा रोग दूर हो जाता है। आत्मिक शक्ति को चिकित्सक भी पहचाने तथा यह शक्ति बहुत बड़ी दुआ का कार्य करेगी । जिससे चिकित्सक तथा रोगी दोनों ही लाभान्वित होंगे । प्रेमपूर्वक भावना से रोगी के दर्द को महसूस करते हुए रोग को मिटाओ तो तीव्र गति से रोगी स्वस्थ्य हो जायेगा ।

अधिवेशन के अध्यक्ष मद्रास के सर्जन डा० एस० आनन्दन जी ने कहा कि आज मानव अपनी आंतरिक सुख रान्ति को भूलकर भौतिक साधनों द्वारा होने वाले सुख के पीछे भागता है । उसमें असफल होने पर अशान्ति होती और उसका तनाव बढ़ जाता है अतएव तनावमुक्त होने तथा शांतिमय जीवन के लिए राजयोग का निरंतर अभ्यास आवश्यक है।

अधिवेशन में अहमदाबाद के डा० ऋषिकेश, डा० सी० पी० तिवारी, डीन, मेडिकल कालेज, इन्दौर, डा० उषा किरण, देहली, ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये । पश्चिमी जर्मनी की ब्रह्माकुमारी सुमन बहिन ने सामूहिक ध्यान का अभ्यास कराया। डा० डी० पी० मुखर्जी ने धन्यवाद दिया तथा बह्माकुमार रमेश शाह, बम्बई ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(पृष्ठ १ का शेष)

डॉ० सती शुक्ला, प्रेसिडेन्ट, मेडिकल एसोसिएशन, इन्दौर ब्रांच ने शुभकामनाओं का संदेश दिया। बम्बई से टी. वी. एवं रेडियो आर्टिस्ट भ्राता मंगेश गोकर्ण तथा श्रीमती ज्योति गोकर्ण ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सम्मेलन का संचालन नई-दिल्ली सेवा केन्द्र की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने किया।

इन्दौर—'अन्तर्राष्ट्रीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन' के अवसर पर आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर' का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, प्र० ब्र० ई० वि० वि० तथा अन्य मोमबत्तियां जलाकर कर रहे हैं।

दिल्ली (हरी नगर)—शिवरात्रि पर्व पर आयोजित झांकी को देखने भ्राता एच० बी० डी० मलिक, उपनिदेशक दि० वि० प्रा० युगल सहित पधारे। ब्र० कु० शुक्ला बहन उन्हें 'शिव और शंकर में अन्तर' बता रही हैं।

अम्बाला कैंट में 'विश्व सहयोग आध्यात्मिक बैंक' के उद्घाटन समारोह में ब्र० कु० संगीता बहन भाषण कर रही हैं। मंच पर अन्य वक्तागण विराजमान हैं।

रांची—त्रिमूर्ति शिवजयन्ति के उपलक्ष्य में आयोजित 'शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का उद्घाटन साप्ताहिक पत्र 'दी न्यू रिपब्लिक' के सम्पादक भ्राता चारु भा जी फूलों की माला काटकर कर रहे हैं।

विदर्भ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र० कु० पुष्पारानी शिवध्वजारोहण कर रही हैं। अन्य भाई-बहनें ईश्वरीय स्मृति में मग्न हैं।

धरीपदा—शिवरात्रि के पावन पर्व पर शिवधारा का झण्डा लहराने के पश्चात् भ्राता बी० पी० खफ़ुआ, आई० पी० एस०, पुलिस अधीक्षक तथा अन्य भाई-बहनें शिव की याद में खड़े हैं।

वारंगल—५२ वीं शिवजयन्ती पर आयोजित एक समारोह में ब्र० कु० सविता बहन शिवै का परिचय दे रही हैं। मंच पर भ्राता नागभूषण राव जी, एम० एल० ए० तथा अन्य अतिथिगण विराजमान हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D, (E)—70